दिशानिर्देश

कला समेकित अधिगम

कला समेकित अधिगम

दिशानिर्देश

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रस्तावना

'कला समेकित अधिगम' (AIL) अनुभवात्मक अधिगम की एक ऐसी रूपरेखा है जो सभी विद्यार्थियों के अपने अभिगम बिंदुओं (access points) के माध्यम से सीखने का एक-समान वातावरण प्रदान करती है। 'कला समेकित वातावरण' में विद्यार्थी कला-गतिविधियों में संलग्न रहते हैं और इस माध्यम से नये अर्थ का सृजन करते हैं।

'कला समेकित अधिगम' की परिकल्पना ऐसे शिक्षण-शास्त्र के रूप में की गई है जो विद्यालयी-शिक्षा के सभी स्तरों पर लागू होता है। जिसका उद्देश्य विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक और मनोगत्यात्मक ज्ञानक्षेत्रों (साइकोमोटर डोमेन) को विकास करना है। 'कला समेकित अधिगम' ने विषयों के आपसी जुड़ाव और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को कई स्तरों पर समग्रता प्रदान की है।

शिक्षण-शास्त्रीय उपकरण के रूप में इसे कार्यान्वित करने से पहले, इस रूपरेखा का देश भर के विभिन्न स्कूलों में परीक्षण किया गया ताकि यह पता लगाया जा सके कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सार्थक और आनंदपूर्ण बनाने में यह कितना व्यावहारिक और प्रभावी है। इस प्रक्रिया में अनेक भागीदार जैसे; शिक्षक, प्रशासक-वर्ग और अभिभावक शामिल थे। इन सब की प्रतिपुष्टियाँ अत्यधिक सकारात्मक और उत्साहवर्धक रही हैं।

कला समेकित अधिगम शिक्षण-शास्त्र का प्रारम्भिक कक्षा के शिक्षकों की योग्यता आधारित शिक्षण की तैयारी के लिये स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एक पहल NISHTHA (National Initiative for School Heads' and Teachers'Holistic Advancement), में समावेशित किया गया है। इस विशाल क्षमता निर्माण कार्यक्रम, जिसमें कला समेकित अधिगम एक प्रशिक्षण मॉड्यूल है, के सुचारू क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए, यह दिशानिर्देश हमारे शिक्षकों के लिये महत्वपूर्ण एवं सुचारू मार्गदर्शक की भूमिका निभायेगा।

ये दिशानिर्देश 'कला समेकित अधिगम' के एक अभिनव शिक्षण-शास्त्र के रूप में व्याख्या करते हैं और सभी शैक्षिक भागीदारों को इसके महत्व और प्रासंगिकता से अवगत कराते हैं। अगर सही अर्थों में इन दिशानिर्देशों को ध्यान में रखा जाए, तो यह ऐसी जीवंत कक्षा बनाने में सहायता कर सकते हैं, जहाँ हम विद्यार्थियों को गाते हुए सुन सकते हैं; उन्हें नृत्य, अभिनय और कला के कार्य करते देख सकते हैं। साथ ही साथ, उनकी शैक्षिक अवधारणाओं की बढ़ती हुई समझ की झलक भी देख सकेंगे।

इन दिशानिर्देशों का विकास विभागीय और संदर्भ व्यक्तियों के संघर्ष की पराकाष्ठा है। ये सभी इस यात्रा का हिस्सा रहे हैं; जो अब एक महत्वपूर्ण पड़ाव तक पहुँच चुकी है। इस पूरी यात्रा के दौरान गहन चर्चाएँ हुईं जिनके फलस्वरूप नई अवधारणाओं, विधियों और उद्देश्यों की प्राप्ति हुई। इसके फलस्वरुप 'कला समेकित अधिगम' एक शिक्षण-शास्त्र का रूप ले पाया।

मैं स्कूलों के शिक्षकों और प्रमुखों, जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान, एससीईआरटी और आरआईई के प्रति आभार प्रकट करना चाहूँगा जिन्होंने इस अभिनव शिक्षण-शास्त्र में विश्वास दिखाया और इसे अपने स्कूलों में लागू करने का ईमानदार प्रयास किया। उनके इन्हीं प्रयासों ने 'कला समेकित अधिगम' को इसका वर्तमान रूप देने में सहायता की है।

मैं इस पहल के सम्बन्ध में प्रोफेसर पवन सुधीर, अध्यक्षा, कला और सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, (DEAA) की परिकल्पना और प्रतिबद्धता की भी सराहना करता हूँ जिसके परिणामस्वरूप 'कला समेकित अधिगम' का अनुभवात्मक शिक्षण-शास्त्र के रूप में विकास हुआ।

हृषिकेश सेनापति

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

सितम्बर 2019

आभार

अनुभवात्मक और आनंदपूर्ण अधिगम के लिए शिक्षण-शास्त्र के रूप में 'कला समेकित अधिगम' के वर्तमान दिशा-निर्देश अनेक विचारों का संग्रह है जो एक लंबी अवधि के दौरान परिपक्व हुए हैं। 'कला समेकित अधिगम' की इस प्रक्रिया के प्रारंभ से ही हमारे शिक्षक और विद्यालय-प्रमुखों ने इसके प्रयास और प्रसार में अथक और सक्रिय साथ दिया।

इस शिक्षण-शास्त्र पर प्रशिक्षण और इसके कार्यान्वयन में विशेषज्ञों से प्राप्त सुझावों ने इन दिशा-निर्देशों के विकास में बहुमूल्य योगदान दिया है। उनके योगदान और सुझावों के बिना इन्हें वर्तमान स्वरूप दे पाना संभव नहीं हो पाता।

सबसे पहले मैं प्रो. हृषिकेश सेनापति, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को उनके निरंतर समर्थन और मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद देना चाहूँगी, जिसके बिना इन दिशानिर्देशों को प्रकाश में लाना संभव न होता। अपने समृद्ध अध्ययनों और कला-शिक्षा पर अमूल्य विचारों के लिए, प्रतिष्ठित कला-शिक्षक, स्वर्गीय प्रो. देवी प्रसाद और डॉ विवेक बेनेगल, राष्ट्रीय मानसिक जाँच एवं स्नायु विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु का धन्यवाद व्यक्त करना मेरे लिए सम्मान का विषय है जिनके कुछ विचारों को इस दस्तावेज़ में भी यथोचित स्थान दिया गया है। मैं पर यहाँ पर यूनेस्को के सिओल एजेन्डा (2010) का विशेष जिक्र करना चाहूँगी जिससे हमें कला शिक्षा का यह व्यापक खाका (जिसे आप QR Code से देख सकते हैं) प्राप्त हुआ। मैं आभारी हूँ उन सभी शोध कर्ताओं के प्रति जिनके अध्ययन और शोध कार्यों का इस दस्तावेज में जिक्र किया है।

इस दस्तावेज़ की समीक्षा करने में शामिल श्रीमती अनुपमा चाँद, ज्ञान भारती विद्यालय, दिल्ली; डॉ. आशा सिंह, लेडी इरविन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय और श्री सिद्धार्थ गंडोत्रा, स्वतंत्र शोधार्थी को इन दिशानिर्देशों की स्पष्टता और आकार देने में लगाये प्रयासों के लिए विशेष धन्यवाद देना चाहूँगी।

'कला समेकित अधिगम' संबंधी अपने अनुभवों को हमारे साथ साझा करने और देश के विभिन्न विद्यालयों में इसे लागू करने में सहायता करने के लिए मैं सुश्री वीणा गांधी, प्रधानाध्यापिका, निगम प्रतिभा विद्यालय, नई चौखंडी; विक्रम सोनबा अडसूल, शिक्षक, जिला परिषद् प्राथमिक विद्यालय, अहमदनगर, महाराष्ट्र; और डॉ. सुमन सिंह, माध्यमिक विद्यालय, सीवान, बिहार; का हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। इस विषय पर उनके अनुभव की झलक इस दस्तावेज़ में सम्मिलित की गई है।

मैं DIET राजेंद्र नगर, विशेष रूप से डॉ. अशोक अरोड़ा, (डाइट के तत्कालीन प्राचार्य) और दिल्ली नगर निगम, शिक्षा विभाग के अधिकारियों की ऋणी हूँ जिन्होंने अपने विद्यालयों में 'कला समेकित अधिगम' उपागम के क्षेत्र-परीक्षण में अपना सक्रिय सहयोग दिया। उनके सहयोग से ही दिल्ली राज्य (पश्चिमी जिला) के चयनित विद्यालयों में 'कला समेकित अधिगम' की यात्रा आरंभ हो सकी और देश के विभिन्न राज्यों में 'कला समेकित अधिगम' को ले जाने के लिए एक आदर्श उदाहरण के रूप में कार्य किया।

'कला समेकित अधिगम' में प्रशिक्षित होने के इच्छुक शिक्षकों और शिक्षक-प्रशिक्षकों की पहचान करने में सक्रिय सहयोग के साथ-साथ अपने राज्यों में गतिविधियों को लागू करने और उनका विस्तार

करने के लिए मैं दिल्ली, हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, मेघालय, जम्मू और कश्मीर, बिहार, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, त्रिपुरा, मध्य प्रदेश और पंजाब के शैक्षिक-प्रशासकों, विशेष रूप से SCERTs का भी आभार व्यक्त करना चाहूँगी।

यहाँ अपने प्राथमिक शिक्षकों की क्षमता-निर्माण और 'कला समेकित अधिगम' उपागम को लागू करने के लिए सभी पांच क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूर और शिलांग) और चार डीएमएस स्कूलों (अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर) का यहाँ सक्रिय भागीदारी का उल्लेख करना भी प्रासंगिक होगा।

इस दस्तावेज़ में दिए गए 'कला समेकित अधिगम' के सभी उदाहरण विभिन्न शिक्षकों और शिक्षक-प्रशिक्षकों द्वारा विकसित किए गए हैं। मैं उन सभी का धन्यवाद करती हूँ। इस प्रकाशन में दिए गए चित्र उन शिक्षकों और विद्यालय-प्रमुखों का अतिरिक्त योगदान है जो सक्रिय प्रयोगकर्ता के रूप में इस यात्रा की शुरुआत से हमारे साथ जुड़े हुए हैं।

मैं श्वेता उप्पल, मुख्य संपादक, प्रकाशन प्रभाग को भी हार्दिक धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने इस दस्तावेज़ को इसकी वर्तमान गुणवत्ता के साथ सामने लाने में सहयोग दिया।

इन दिशानिर्देशों के हिंदी अनुवाद के लिए मैं श्री अक्षय कुमार दीक्षित, हिंदी शिक्षक, राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, जी-ब्लाक साकेत, नई दिल्ली; और सुश्री रंजना, स्वतंत्र अनुवादक, नई दिल्ली को भी हार्दिक धन्यवाद देना चाहूँगी। 'कला समेकित अधिगम' के बारे में इनकी गहरी समझ ने इस दस्तावेज़ को सहज और सटीक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अंत में, मैं नयना प्रसाद और निशान चक्रवर्ती, जेपीएफ, 'कला समेकित अधिगम' कार्यक्रम और संजीद अहमद, डीटीपी ऑपरेटर, डीईएए द्वारा इस दस्तावेज़ के विकास में की गई मेहनत और प्रयासों की सराहना करती हूँ। मेरा मानना है कि यह दस्तावेज़ 'कला समेकित अधिगम' शिक्षण-शास्त्र को आगे बढ़ाने और इस कार्यक्रम से जुड़े हितधारकों को इससे परिचित कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।

प्रो. पवन सुधीर
विभागाध्यक्ष
कला और सौन्दर्यबोध शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

विषय-वस्तु

प्रस्तावना

आभार

1. परिचय 1

1.1 'कला समेकित अधिगम' के महत्व को चिह्नित करने वाले कुछ अनुकरणीय अध्ययन 4

1.2 'कला समेकित अधिगम' के प्रतिरूप (मॉडल) का निर्माण करना 6

1.3 कार्यस्थलों से प्रतिपुष्टि (फीडबैक) 10

1.4 'कला समेकित अधिगम' के उद्देश्य 14

1.5 स्तरानुसार अधिगम के उद्देश्य 15

1.5.1 पूर्व-प्राथमिक 15

1.5.2 प्राथमिक 16

1.5.3 उच्च प्राथमिक 17

2. कार्यान्वयन की रणनीतियाँ 19

2.1 दक्षता-विकास 20

2.1.1 शैक्षिक प्रशासकों और विद्यालय-प्रमुखों का अभिविन्यास 21

2.1.2 'कला समेकित अधिगम' के शिक्षण-शास्त्र पर सभी शिक्षकों का प्रशिक्षण 21

2.1.3 समुदाय को का संवेदीकरण 22

2.2 गतिविधियों की योजना बनाना 22

2.2.1 पूर्व-प्राथमिक 23

2.2.2 प्राथमिक 24

2.2.3 उच्च प्राथमिक 25

2.3 समय की योजना बनाना 26

2.3.1 वार्षिक केलेंडर की योजना बनाना 28

2.3.2 समय-सारणी की योजना बनाना 28

2.4 संसाधन 31
2.4.1 संसाधनों के प्रकार 31
2.5 कक्षा-प्रबंधन 34
2.6 कला के कार्यों का प्रदर्शन करना 35
3. 'कला समेकित अधिगम' के माध्यम से आकलन 37
3.1 'कला समेकित अधिगम' आधारित आकलन 38
3.2 'कला समेकित अधिगम' आधारित आकलन के लिए उपकरण और तकनीकें 40
3.3 क्या करें और क्या न करें 41
4. भूमिका और उत्तरदायित्व 43
4.1 विद्यालय-प्रमुख की भूमिका और उत्तरदायित्व 44
4.2 शिक्षक की भूमिका और उत्तरदायित्व 44
4.3 'कला समेकित अधिगम' में कला-शिक्षक की भूमिका और उत्तरदायित्व 46
5. 'कला समेकित अधिगम' की कला-गतिविधियाँ 47
5.1 गतिविधि – हिंदी, कक्षा 1 48
5.2 गतिविधि – अंग्रेज़ी, कक्षा 3 51
5.3 गतिविधि – गणित, कक्षा 4 56
5.4 गतिविधि – अंग्रेज़ी, कक्षा 6 60
5.5 गतिविधि – विज्ञान, कक्षा 7 63
5.6 गतिविधि – गणित, कक्षा 8 67
5.7 'कला समेकित अधिगम' के लिए कुछ महत्वपूर्ण विधियाँ और तकनीकें 70
संदर्भ 73
अतिरिक्त अध्ययन के लिए कुछ सुझाव 74

अभिव्यक्ति का आनन्द
ज़ेड. पी. पी. स्कूल, बन्दगरवस्ती, कर्जत, अहमदनगर,महाराष्ट्र

1

परिचय

बच्चे स्वाभाविक रूप से उत्सुक होते हैं। वे वस्तुओं के साथ खेलना पसंद करते हैं। संगीत, लय और रंग उन्हें आकर्षित करते हैं। लगभग जन्म के समय से ही वे प्रकाश, ध्वनि, लय, गति, छाया, आकार और रंगों के परस्पर खेल से आनंदित होते हैं। दिन-प्रतिदिन के अनेक दृश्यात्मक और स्पर्शात्मक अनुभव बच्चों के समग्र विकास में सहायता करते हैं जैसे- रसोई में अनाज या दालों की छानबीन, रेत से मूर्ति आदि बनाना, अँगुलियों से पेंटिंग करना, कोयले से लकीरे खींचना, डंडे और झाड़ू जैसी वस्तुओं से खेलना, बाबा जी की छड़ी को घोड़ा बनाकर उसकी सवारी करना या 'घर-घर' खेलना आदि। वे धूप का प्रयोग करते हुए विभिन्न छाया-चित्र बनाते हैं जिससे उनकी प्रयोग करने की प्रवृति और वैज्ञानिक स्वभाव की झलक मिलती है। वे लकड़ियों या कंकड़ों से वर्ग, रेखाएँ और वृत्त जैसे आकार बनाते हैं जिससे उनके गणितीय अवधारणाओं की ओर झुकाव का संकेत मिलता है। छोटे बच्चों के लिए, आड़ी-तिरछी लकीरें खींचना या चीज़ों का संग्रह करना उनके नैसर्गिक स्वभाव का

पहला प्रकटीकरण होता है। यदि उन्हें उनकी कलाकृतियों का वर्णन करने का अवसर दिया जाए तो समझ में आता है कि उनके पीछे कितनी विस्तृत सोच और कल्पनाशीलता छिपी है। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं उनके चित्र और मूर्तियाँ संसार के प्रति उनकी सोच और विचारों को प्रतिबिंबित करने लगती हैं।

प्रारंभिक शिक्षा का केंद्र-बिंदु होना चाहिए- कलात्मक संवेदनाओं और रचनात्मक अभिव्यक्ति का पोषण। कला का उपयोग करने से बच्चे अपने आस-पास के वातावरण से जुड़ते हैं और उनमें विविधतापूर्ण परिप्रेक्ष्यों और दृष्टिकोणों का विकास भी होता है। कला के उपयोग से विद्यार्थी बिना किसी बाधा के अवलोकन करने, अन्वेषण करने, सोचने और सीखने में सक्षम बन जाते हैं। सीखने की इस प्रक्रिया के दौरान बच्चे जटिल अनुभवों को समेकित और सरल करते हैं और संज्ञानात्मक और भावनात्मक समेकन से सृजन करते हैं। इस तरीके से, विद्यार्थी कला का उपयोग सीखने की प्रक्रियाओं को समृद्ध करता है।

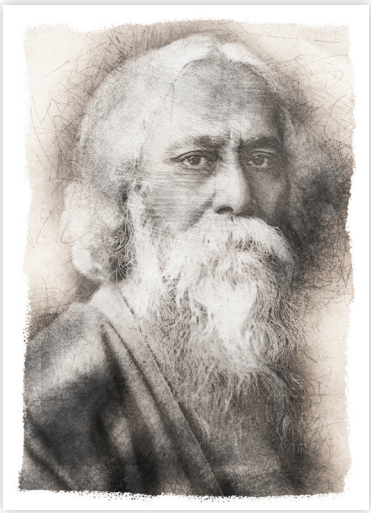

भारत में, नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने कला और अधिगम के बीच संबंध के विचार की नींव रखी। उनके कई विचारों को उनके विद्यार्थी देवी प्रसाद (1998) द्वारा 'कला- शिक्षा का आधार' नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। कार्यक्षेत्रों में किए गए व्यापक अनुसंधानों ने सिद्ध किया है कि सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में दृश्य और प्रदर्शन कलाओं का उपयोग सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करता है, समस्याओं को सुलझाने की क्षमता विकसित करता है और मानसिक कल्पना-चित्रों (बिंबों) के प्रयोग की योग्यता में सुधार करता है। साथ ही, यह स्थान (स्पेस) का रचनात्मक रूप से उपयोग करने की समझ भी देता है। इससे बच्चों के समग्र रूप से सीखने और सर्वांगीण विकास में सहायता मिलती है। 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा' (2005) की सिफारिशें सुझाती हैं कि सभी स्तरों पर कला-शिक्षा विद्यार्थियों को ब्रह्मांड की सुंदरता की पूरी तरह से सराहना करने और उसका अनुभव करने में सक्षम बनाती है और उनके स्वस्थ मानसिक विकास में सहायता करती है। [राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एनसीईआरटी, 2005] 'कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच पर राष्ट्रीय फोकस समूह के आधार-पत्र' (रा.शै.अ.और प्र. प.) के पृष्ठ 7-8 में कहा गया है कि कला का उपयोग सीखने के आधार के रूप में किया जाना चाहिए। यह आधार-पत्र स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम में दसवीं कक्षा तक कला शिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में शामिल करने पर भी बल देता है।

'कला समेकित अधिगम' सीखने-सिखाने का एक मॉडल है जो 'कलाओं के माध्यम से' और 'कलाओं के साथ' सीखने का एक तरीका है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ कला सीखने-सिखाने का माध्यम बन जाती है, पाठ्यक्रम के किसी भी विषय की अवधारणाओं को समझने की कुंजी बन जाती है। 'कला समेकित अधिगम' द्वारा विद्यार्थी विभिन्न कला-रूपों के माध्यम से विभिन्न अवधारणाओं के बीच सृजनात्मक रूप से संबंध बनाते हैं। दृश्य कलाओं (चित्र बनाना, रंग भरना, मिट्टी से खिलौने आदि बनाना, चाक द्वारा बर्तन आदि बनाना, कागज़ से वस्तुएँ बनाना, मुखौटे और कठपुतली बनाना, अन्य परंपरागत शिल्प) और प्रदर्शन कलाओं (संगीत, नृत्य, थिएटर, कठपुतली आदि); दोनों के अनुभव, बच्चों को विभिन्न अवधारणाओं की बेहतर समझ और ज्ञान के सृजन की ओर ले जाते हैं। कला में लचीलापन निहित होता है अत: इसके द्वारा विद्यार्थियों की आयु के अनुसार उन्हें उपयुक्त अवसर दिए जा सकते हैं। इससे विद्यार्थी अपनी व्यक्तिगत गति से सीख सकते हैं। यह 'अनुभव आधारित अधिगम' के दृष्टिकोण से भी मेल खाता है।

सियोल एजेंडा (2010) की प्रस्तावना इस बात पर बल देती है कि

> *" ... आज के संसार में जहाँ एक ओर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हो रही है, वहीं दूसरी ओर असाध्य सामाजिक और सांस्कृतिक अन्याय भी हो रहा है। तेज़ी से बदलती इस दुनिया में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षा-व्यवस्था संघर्ष कर रही है। इस शिक्षा-व्यवस्था के रचनात्मक परिवर्तन में कला-शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है।"*

यह एजेंडा कला-शिक्षा के विकास के लक्ष्यों को परिभाषित भी करता है:

i. सुनिश्चित करें कि कला-शिक्षा सुलभ है और यह शिक्षा के उच्च गुणवत्तापूर्ण नवीकरण का मौलिक और स्थायी घटक है।

ii. सुनिश्चित करें कि कला-शिक्षा की गतिविधियों और कार्यक्रमों की अवधारणा और कार्यान्वयन की गुणवत्ता श्रेष्ठ/उच्च है।

iii. आज की दुनिया के सामने आने वाली सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियों के समाधान में योगदान देने के लिए कला-शिक्षा के सिद्धांतों और रीतियों को लागू करें।

1.1 'कला समेकित अधिगम' के महत्व को चिह्नित करने वाले अध्ययनों के कुछ उदाहरण

सीखने की प्रक्रिया में कला के महत्व की पुष्टि करने वाले कई महत्वपूर्ण शैक्षिक अनुसंधान उपलब्ध हैं। कला के माध्यम से सीखने का लक्ष्य विद्यार्थी की संज्ञानात्मक (सोच, स्मरण और चिंतन), संवेदात्मक (सामाजिक और भावनात्मक) और मनो-गत्यात्मक (शरीर और गति-चाल का उपयोग) क्षमताओं का विकास करना है। खान और अली (2016) ने अपने अध्ययन *'ललित कला की शिक्षा का महत्व- एक अवलोकन'* में पाया कि ललित कलाओं का अध्ययन और उनमें हिस्सा लेना विद्यार्थी के व्यवहार और दृष्टिकोण, दोनों को प्रभावित करता है। "ललित कलाओं की उचित शिक्षा का यह प्रभाव होता है कि विद्यार्थी जो भी देखते है, उन्हें ध्यान से देख पाते हैं; जो भी सुनते हैं, उसे ध्यान से सुन पाते हैं; और जिन चीज़ों को वे छूते हैं, उन्हें महसूस भी कर पाते हैं। ललित कलाओं में संलग्न होने से विद्यार्थियों को छपी हुई सामग्री की सीमाओं से परे या साबित करने योग्य नियमों से हटकर सोचने में सहायता मिलती है।"

कला के माध्यम से संभावित परिणामों के प्रमाण के रूप में कुछ अनुभवजन्य अध्ययनों को यहाँ उद्धृत किया गया है।

- **कला और वंचित समूह:** वाशिंगटन के एक प्राथमिक विद्यालय में एक अध्ययन किया गया। उस विद्यालय में समाज के सभी वर्गों के विद्यार्थी पढ़ते थे। अध्ययन द्वारा यह पाया गया कि यदि शैक्षणिक कक्षाओं में कलाओं का उपयोग किया जाये तो इससे गणित और अंग्रेजी की परीक्षाओं में प्राप्त अंकों में सुधार होता है (डोना सेंट जॉर्ज, 2015)। इस समेकित पद्धति (इंटीग्रेटेड अप्रोच) से निर्धन विद्यार्थियों को विशेष लाभ हुआ। शोधकर्ता ने इस बात पर बल दिया है कि कला के समेकन में रुचि विश्व-स्तर पर बढ़ रही है। यह रुचि उन अनुसंधानों के कारण बढ़ रही है जो विद्यार्थियों के शैक्षणिक, सामाजिक और व्यक्तिगत लाभों की ओर संकेत करते हैं।

- **कलाएँ नवीन/अभिनव प्रक्रियाओं का सृजन करती हैं:** नोबोरी (2012) इस बात से चकित थी कि कलाएँ अधिगम के मार्गों को किस प्रकार खोल देती हैं। कभी-कभी कला के समेकन की प्रक्रिया, कक्षा में कला-परियोजनाओं के उपयोग जैसी लग सकती है। लेकिन यह शिक्षण की एक पद्धति है, जो केंद्रीय पाठ्यचर्या और कला के अनुभवों को अभिन्न रूप से जोड़ देती है। जोड़ने का यह कार्य सीखने के रोचक संदर्भों द्वारा किया जाता है। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों द्वारा सौर-प्रणाली की अपनी समझ को प्रदर्शित करने के लिए गतिमान और अगतिमान मुद्राओं का उपयोग करते हुए नृत्य करना।

- **कला और संज्ञानात्मक प्रक्रिया:** बेनेगल (2010) द्वारा उल्लेख किया गया कि कला मस्तिष्क में नाटकीय बदलाव लाती है, जैसे कि 'ध्यान देने के तंत्र' को मजबूत करना। मस्तिष्क के वे क्षेत्र जो संगीत में सम्मिलित होते हैं, वे भाषा, श्रवण धारणा, ध्यान, स्मृति और मोटर नियंत्रण की प्रक्रियाओं में भी सक्रिय होते हैं। आज के ज्ञान आधारित संसार में संतुलित मानसिक विकास को बढ़ावा देने के लिए कला शिक्षा की बहुत आवश्यकता है।
- **कला और सामाजिक-भावनात्मक विकास:** प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर किए गए अपने शोध में हार्वे (1989) ने पाया कि कला प्रक्रिया बोध, उपलब्धि, अभिप्रेरणा और आत्म-अवधारणा से जुड़ी होती है। संक्षेप में, जब कला और सीखने की प्रक्रिया का समेकन किया जाता है, तब यह शिक्षा के भावात्मक पक्ष को भी मज़बूत करती है। "कला, लय-गति और संगीत के उपयोग के परिणामस्वरूप रूपकों का निर्माण और सामाजिक/भावनात्मक द्वंद्वों का समाधान किया जा सकता है। इस तरह, सृजनात्मक कलाओं की रीतियाँ, 'सृजनात्मकता के संज्ञानात्मक पक्षों' तथा 'व्यवहार और व्यक्तित्व परिवर्तन के चिकित्सीय पक्षों' को आपस में जोड़ती हैं। सोच और भावना के इस समेकन के कारण, सृजनात्मक कलाओं के उपचार सामाजिक/भावनात्मक और शैक्षणिक व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने का अवसर प्रदान करते हैं।"
- **शिक्षण-शास्त्र के रूप में कला:** पुरी और अरोड़ा, (2013) ने नई दिल्ली में नगर निगम विद्यालयों की 107 कक्षाओं में 'कला समेकित अधिगम' के उपयोग की समीक्षा की और पाया कि- (i) स्कूल के वातावरण में उल्लेखनीय बदलाव हुआ (ii) सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की भागीदारी का स्तर बढ़ा (iii) विद्यार्थियों की उपस्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ (iv) शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार हुआ और (v) जिन कक्षाओं में 'कला समेकित अधिगम' का उपयोग नहीं किया जा रहा था, उन कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की तुलना में इन विद्यार्थियों में नई स्थितियों को संभालने के लिए अधिक आत्मविश्वास और खुलापन पाया गया।

उपर्युक्त शोध, ऐसे वातावरण के निर्माण में कला की भूमिका को रेखांकित करता है जो विद्यार्थियों के सामाजिक-भावनात्मक, संज्ञानात्मक और मनो-गत्यात्मक विकास में सहायता करता है।

'कला समेकित अधिगम' की चर्चा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में और विशेष रूप से 'संगीत, कला, नृत्य और रंगमंच पर आधार-पत्र' में एक उपागम (*एप्रोच*) के रूप में की गई है। पिछले दशकों में NCERT द्वारा किए जा रहे निरंतर प्रयासों के माध्यम से इसे आगे बढ़ाया जा रहा है।

इन कार्यक्रम में अखिल भारतीय सहभागिता के लिए विभिन्न प्रान्तों और क्षेत्रों के लोगों की राय लेने के प्रयास किए गए। इसके लिए संस्थानों को तैयार करने के कार्य में सभी हितधारक सम्मिलित थे। इन प्रक्रियाओं का वर्णन आगे के अनुच्छेदों में किया गया है।

1.2 कला समेकित अधिगम के प्रतिरूप (मॉडल) का निर्माण करना

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 की सिफारिशों पर आधारित 'संगीत, कला, नृत्य और रंगमंच पर आधार-पत्र' में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है-

"शिक्षा के माध्यम के रूप में कला का प्रयोग विद्यालयों में विभिन्न विषयों के शिक्षण-अधिगम के रूप में किया जाना चाहिए।"

'कला समेकित अधिगम' के मॉडल को अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देने के लिए तैयार किया गया है। इस मॉडल में प्रत्येक विद्यार्थी को विभिन्न विषयों को सीखने-समझने के लिए दृश्य और प्रदर्शन कलाओं के विशिष्ट अनुभव प्राप्त करने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। ये अनुभव विद्यार्थियों की आयु और स्तर के अनुरूप दिए जाते हैं।

इस मॉडल के विकास के लिए अपनाई गई प्रक्रिया पूरी तरह व्यवस्थित और कार्य-क्षेत्र के अनुसंधान पर आधारित थी। इसके विकास का अनुक्रम निम्नानुसार है:-

आवश्यकताओं का विश्लेषण–

प्रत्येक विद्यालय में सीखने का आनंदमय परिवेश बनाने के लिए 'कला समेकित अधिगम' को कार्यान्वित किया जा सके, इसके लिए उपर्युक्त मॉडल का विकास करने का निर्णय लिया गया था। इस मॉडल के विकास के लिए विभिन्न हितधारकों के साथ परिचर्चाएँ और केंद्रित विचार-विमर्श (फ़ोकस ग्रुप डिस्कशन) आयोजित किए गए थे। इन हितधारकों में सम्मिलित थे- प्रारंभिक स्तर के शिक्षक और विद्यालय-प्रमुख, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदें; विभिन्न मंडलीय शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान; विभिन्न राज्यों के शिक्षा विभाग (बिहार, हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात, मेघालय, कर्नाटक, दिल्ली) आदि। इन परिचर्चाओं के दो उद्देश्य थे-

1. हितधारकों की दक्षता का विकास करने के लिए आवश्यकताओं की पहचान करना
2. इसके तरीकों की योजना बनाना।

हितधारकों के साथ की गई 'बातचीत' और एकत्रित किए गए 'आँकड़े' ऐसे कई मुद्दों और सरोकारों की ओर संकेत कर रहे थे जिनपर ध्यान दिया जाना आवश्यक था। प्रतिभागियों द्वारा अनगिनत प्रश्न पूछे गए। (अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न)

प्रशिक्षण मॉड्यूल की डिजाइनिंग-

विभिन्न हितधारकों द्वारा अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों/मुद्दों और जिन कठिनाइयों का वे सामना कर रहे थे, उनके आधार पर एक प्रशिक्षण पैकेज बनाने का निर्णय सन 2010 में लिया गया। इस प्रशिक्षण पैकेज का उद्देश्य था- शिक्षकों, विद्यालय-प्रमुखों और शिक्षक-प्रशिक्षकों की 'कला समेकित अधिगम' पर दक्षता का विकास करना। इस पैकेज के अंतर्गत उपयुक्त दृश्य-श्रव्य सामग्री जैसे लिखित अभ्यास, वीडियो फ़िल्में और स्लाइड शो के साथ सात प्रशिक्षण मॉड्यूल रखे गए हैं। इन सात मॉड्यूल को निम्नलिखित क्रम से दो भागों में रखा गया है- आइस-ब्रेकर, विद्यालय की दैनिक गतिविधियों में कला, विधियाँ और सामग्री, कला और कला शिक्षा, कला का अन्य विषयों के साथ समेकन, शिक्षा में संग्रहालय की भूमिका और कला में मूल्यांकन।

इस पैकेज को अंतिम रूप देने से पहले दिल्ली राज्य के पश्चिमी जिले के निगम प्राथमिक विद्यालयों में इसका क्षेत्र-परीक्षण किया गया। इस क्षेत्र-परीक्षण को करने के लिए, जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान, (DIET) राजेंद्र नगर, (एससीईआरटी, दिल्ली) और उपनिदेशक (शिक्षा, एमसीडी), पश्चिमी जिला, नई दिल्ली; ने सक्रिय सहयोग दिया। पैकेज के विकास की पूरी प्रक्रिया का दस्तावेजीकरण भी किया गया। इसके बाद, पैकेज के अंतिम स्वरूप का उपयोग दिल्ली के चयनित शिक्षकों की दक्षता के विकास के लिए किया गया।

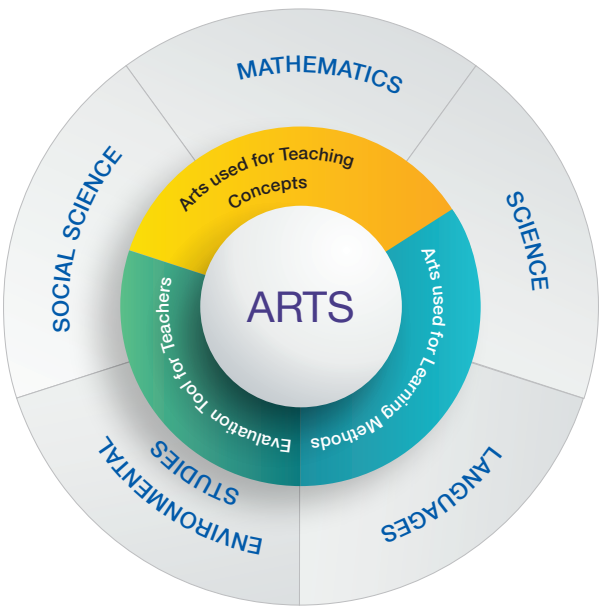

विद्यालयों की दक्षता का विकास

इसके अंतर्गत 'कला समेकित अधिगम' मॉडल और इसके कार्यान्वयन के बारे में शैक्षिक प्रशासकों का अभिविन्यास भी किया गया। इस अभिविन्यास में जिला शिक्षा निदेशालय (DDE), सहायक शिक्षा अधिकारी (AEO), चयनित विद्यालयों के विद्यालय-निरीक्षक और प्रधानाचार्य सम्मिलित थे। शिक्षकों का प्रशिक्षण एक गहन प्रक्रिया थी जो 10 दिनों तक जारी रही। इसमें निम्नलिखित क्रियाकलाप सम्मिलित थे-

- विभिन्न कला-रूपों की विधियों और सामग्रियों का उपयोग करना
- विषय या स्तर के अनुसार गतिविधियों की योजना बनाना
- अभ्यास-सत्र
- प्रस्तुतियों का अनुभव

दक्षता-विकास के इस कार्यक्रम में लगातार तीन महीनों के लिए मासिक सहयोगी-सत्रों (हैंड-होल्डिंग) का भी प्रावधान था। इनसे भी शिक्षकों को यह आत्मविश्वास पाने में सहायता मिली कि वे अपनी कक्षाओं में 'कला समेकित अधिगम' के कौशलों का उपयोग कर सकते हैं।

कार्य-क्षेत्र में अध्ययन (फील्ड-स्टडी)

कला समेकित शिक्षण के कार्यान्वयन के एक वर्ष बाद इसका विद्यालयों में प्रभाव जानने के लिए एक व्यापक अध्ययन किया गया। यह अध्ययन डॉ अशोक अरोरा, तत्कालीन प्रधानाध्यापक और डॉ लवली पूरी, प्रमुख PSTE, DIET राजेन्द्र नगर, और IASE जामिया मिल्लिया इस्लामिया एवं SCERT दिल्ली ने साथ मिलकर किया। इसमें पश्चिमी दिल्ली के 34 एमसीडी विद्यालय (17 कला समेकित शिक्षण वाले और 17 गैर-कला समेकित शिक्षण वाले),102 शिक्षक और 5130 छात्रो को शामिल किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य थे: (i) प्रशिक्षुओं के अनुसार कला समेकित अधिगम की शिक्षण शास्त्र के रूप में संभावनायें, और क्षेत्र का अध्ययन करना (ii) वास्तविक कक्षा में कला समेकित अधिगम की एक शिक्षण शास्त्र के रूप में अपनाने की संभावनाओं और बाधाओं के संबंध में संसाधन व्यक्तियों की धारणा का अध्ययन करना (iii) प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा कला समेकित अधिगम प्रणालियों के अभ्यास की मात्रा का पता लगाना (iv) कला समेकित शिक्षा प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों द्वारा सिखाए गए छात्रों और कला समेकित शिक्षा प्रशिक्षण प्राप्त ना करने वाले शिक्षकों द्वारा सिखाए गए छात्रों के अध्ययन परिणामों की तुलना करना और (v) कला समेकित शिक्षा, शिक्षण-शास्त्र के बारे में स्कूल अधिकारियों (प्रशिक्षित एवं गैर प्रशिक्षित) की धारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

इस शोध अध्ययन में प्रयोग किए गए उपकरणों की सूची इस प्रकार है; *'परीक्षण सूची-1'* कला समेकित अधिगम संबंधी गतिविधियों के अध्ययन के लिये इस उपकरण का प्रयोग किया गया और *परीक्षण सूची-2* का उद्देश्य अध्यापकों द्वारा शिक्षण अधिगम गतिविधियों में प्रयोग की जाने वाली सामग्रियों का अध्ययन करना था। एक और उपकरण *Classroom Observation Schedule (CROS)* का प्रयोग भी किया गया जिसके चार भाग थे (i) शिक्षण-अधिगम वातावरण (ii) शिक्षण रणनीति (iii) व्यक्तिगत विशेषताएँ (iv) आकलन। अध्ययन में प्रयुक्त तीसरा उपकरण इसमें शामिल सभी शिक्षकों की धारणा का अध्ययन करने के लिए *Perception Scale for Teacher (PST)* था। '5 पॉइंट स्केल' जिसमें उनकी धारणा का अध्ययन करने के लिए 4 उप पैमाने शामिल थे जैसे (i) कला समेकित शिक्षा का अर्थ (ii) शिक्षण रणनीति (iii) पाठ्यक्रम सामग्री के साथ न्याय (iv) बच्चों पर प्रभाव।

इस स्टडी में *Interview Schedule for Principals (ISP)* का उपयोग कला समेकित अधिगम पर उनकी अवधारणा एवं विद्यालय के सम्पूर्ण वातावरण पर इसके प्रभाव को समझने/ अध्ययन करने के लिए किया गया। आखिर में *Interview Schedule for Resource Person (ISRP)* का उपयोग निम्नलिखित अवधारणा को समझने के लिए किया गया (i) कला समेकित शिक्षण-शास्त्र का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की क्षमता, (ii) स्कूलों में कार्यक्रम के कार्यान्वयन की व्यवहारिकता (iii) उनके साथ बातचीत के दौरान कला समेकित अधिगम के प्रति उनके व्यवहार में आया परिवर्तन।

अध्ययन के निष्कर्ष सकारात्मक थे और सांख्यिकीय आंकड़े उसके पक्ष में थे। प्रयोगसिध्द निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि प्रशिक्षित अध्यापकों एवं प्राचार्यों का झुकाव गैर प्रशिक्षित अध्यापकों एवं प्राचार्यों की अपेक्षा कहीं अधिक था। कला समेकित शिक्षा प्रशिक्षित लाभार्थियों की अवधारणा, पाठ्यक्रम प्रबंधन, विद्यार्थी केन्द्रित कक्षा, पठन सामग्री का पूर्णत, और बच्चे के समग्र विकास के संदर्भ में सकारात्मक थी। लगभग 90-100% कला समेकित अधिगम पर प्रशिक्षित शिक्षकों का मत था कि इससे शिक्षण-अधिगम की प्रभावशीलता में वृद्धि हुई है। सह-पाठयक्रम गतिविधियों और विद्यालय के वातावरण में बच्चों की भागीदारी में सकारात्मक अंतर दिखने लगा है जो सीखने को अनुभवात्मक और आनंदमय बनाने में सहायक है। जिला शिक्षा निदेशालय (डीडीई) पश्चिमी दिल्ली से प्राप्त सकारात्मक प्रक्रिया के अनुसार विद्यालयों में कला समेकित शिक्षा के लागू होने से सहपाठी अधिगम में वृद्धि हुई।

इस अध्ययन में शामिल संसाधन व्यक्तियों ने कला समेकित शिक्षण-शास्त्र को समझने और लागू करने के लिए शिक्षकों की क्षमता की सराहना की। इस संदर्भ में एक आम सहमति से उन्होनें इसे एक प्रभावी नवाचार है, जो शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच सकारात्मक संबंध बनाने की क्षमता रखता है। कुल मिला कर अध्ययन लाभकारी था एवं कला समेकित अधिगम शिक्षा शास्त्र की प्रभावशीलता का विश्लेषणात्मक प्रमाण था।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

कला अधिगम शिक्षण पर 2012 दिसंबर में कला एवं सौन्दर्य शास्त्र विभाग और NCERT द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य कला समेकित अधिगम के अभ्यासकर्ताओं को एक साझा मंच प्रदान करना था जहां वह अपने कक्षा संबंधी अनुभव, विस्तृत अध्ययन और इस शिक्षण-शास्त्र का बच्चों और शिक्षकों पर प्रभाव की चर्चा कर सकें। साथ ही DIET और NCERT के शिक्षा प्रतिनिधियों को उन लोगों से रुबरु होने का मौका देना था, जिन्होनें इसे लागू किया। इसका एक स्पष्ट उदेश्य देश के अन्य राज्यों में इसे लागू करने की पैरवी करना भी था।

सेमिनार की शुरुआत प्रोफेसर कृष्ण कुमार विख्यात शिक्षाविद एवं पूर्व निदेशक एनसीईआरटी के उद्‌बोधन से हुई, जिसमें उन्होनें छात्र के सम्पूर्ण विकास में कला की भूमिका को केंद्र में रखा। मुख्य अतिथि के उद्‌बोधन के अतिरिक्त कला समेकित अधिगम के अभ्यासकर्ताओं की 14 प्रस्तुतियाँ थी। यहाँ शिक्षकों और छात्रों के कार्यों की एक प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें छात्रों के पोर्टफोलियो, शिक्षकों की डायरी, बच्चों के कला कार्य आदि प्रदर्शित किए गऐ। प्रस्तुतिकर्ताओं से प्रश्नोत्तर के लिए एक खुला मंच का आयोजन भी था। कार्यक्रम का अंतिम सत्र राज्य के प्रतिनिधियों के साथ रोड-मैप बनाने के लिए था। सेमिनार का समापन महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित एक छोटी सी प्रस्तुति और आरटीई एक्ट 2009 पर एक छोटे से नाटक के साथ हुआ। यह प्रस्तुतियां नगर निगम प्राथमिक विद्यालय के छात्रों ने दी।

सेमिनार में 155 लोगों ने हिस्सा लिया, जिसमें शिक्षक, शिक्षक-प्रशिक्षक, DIET प्रिन्सिपल, निदेशक SCERT, जामिया मिल्लिया इस्लामिया और दिल्ली विश्वविध्यालय के IASE के वरिष्ठ प्राध्यापक, NIE के प्राध्यापकों ने भी हिस्सा लिया। यह पहल देश के कई राज्यों के प्राथमिक विद्यालयों में कला समेकित शिक्षा को लागू करने के लिए एक शुरुआत साबित हुई।

एनसीईआरटी ने 2017 तक देश के 15 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में कला समेकित शिक्षा पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम संचालित किए। कला समेकित शिक्षा को संबंधित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आरआईई) के साथ पांच क्षेत्रों में ब्लॉक स्तर के शोध के अपने ऑन-गोइंग पहल में अनुभवात्मक और आनंदमई शिक्षा के शिक्षण के रूप में सफलतापूर्वक पेश किया गया है।

1.3 विद्यालयों से मिलने वाली प्रतिपुष्टि

'कला समेकित अधिगम' अब तक 15 राज्यों के चयनित स्कूलों में पहुँच चुका है । इसका प्रयोग करने वाले शिक्षक और विद्यालय-प्रमुख अपनी सफलता की कहानियाँ हमारे साथ और अपने सहयोगियों के साथ साझा कर रहे हैं। इस तरह की कुछ अभिव्यक्तियाँ नीचे दी गई हैं:

हमारे विद्यालय में 'कला समेकित अधिगम' का प्रयोग होते हुए आठ साल हो गए हैं। 'कला समेकित अधिगम' से पहले, अधिगम और उपलब्धियों की हमारी पूर्व-निर्धारित अवधारणाएं थीं और वे शिक्षण के परंपरागत तरीकों तक ही सीमित थी। मात्र साफ और स्वच्छ इमारत, चार्टों से सजी कक्षा, अनुशासित विद्यार्थी और अच्छे परीक्षा-परिणाम हमें पर्याप्त लग रहे थे। लेकिन, जब एनसीईआरटी से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली दो शिक्षिकाओं ने इस शिक्षण-शास्त्र को लागू करना शुरू किया, तो विद्यालय के संपूर्ण वातावरण में बदलाव आने लगा। इसका प्रभाव विद्यार्थियों के व्यवहार, शिक्षकों के व्यवहार और शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों में भी दिखाई दिया। यह देखा गया कि 'कला समेकित अधिगम' आधारित कक्षाओं में भाग लेने वाले बच्चे अधिक आत्मविश्वासी और जिम्मेदार बन गए थे। उन्होंने पहले से अधिक बातचीत करना और दूसरों की सहायता करना प्रारंभ कर दिया था। अन्य शिक्षकों ने भी बहुत जल्द ही इसे अपनी कक्षाओं में लागू करना शुरू कर दिया। इन कक्षाओं से हमेशा ताली बजाने, गाने आदि की आवाजें आया करती थी जो विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया की ओर आकर्षित करती थीं। बच्चों का शैक्षणिक स्तर कुल मिलाकर बेहतर हो गया था: ज़ोनल और अंतर-ज़ोनल स्तर की प्रतियोगिताओं में उनकी भागीदारी उल्लेखनीय रूप से बढ़ गई और छात्रवृत्तियों की संख्या भी बढ़ गई थी।

धीरे-धीरे इसने हमें यह विश्वास दिलाया कि बच्चों को अपने विचारों और सोच को व्यक्त करने की स्वतंत्रता देने से सीखने के प्रति उनकी रुचि बढ़ सकती है। 'कला समेकित अधिगम' खोजबीन करने, प्रयोग करने और अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त अवसर बच्चों को प्रदान करता है। यह उन्हें अपने कौशलों में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद करता है। अब मेरा यह मानना है कि कोई बच्चा यदि पहली पीढ़ी का शिक्षार्थी है, समाज के कमजोर वर्गों से संबंधित है या शारीरिक रूप से अक्षम है; ये कारण उसकी क्षमताओं का निर्धारण या उन्हें सीमित नहीं कर सकते। उचित वातावरण और मार्गदर्शन दिए जाने पर वह बच्चा भी प्रतिभा और सृजनात्मकता में किसी से कम नहीं है। विद्यालय के परिवेश को यह समावेशन 'कला समेकित अधिगम' प्रदान करता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी समग्र विकास का एक हिस्सा बन पाते हैं।

वीणा गांधी
प्रधानाचार्या
निगम प्रतिभा विद्यालय
नई चौखण्डी, दिल्ली 110018

'कला समेकित अधिगम' उपागम मेरी राय में अब तक का सबसे अच्छा उपागम सिद्ध हुआ है। 'कला समेकित अधिगम' की वजह से ही मेरे विद्यार्थियों के साथ मेरा तालमेल मजबूत बना और मैं उन्हें बेहतर समझ सका। इसने विषय को आसान और रोचक तरीके से समझाने के मेरे कौशल को मज़बूत बनाया। मेरे विद्यार्थी विषय को बेहतर और स्पष्ट रूप से समझ सके और सीखने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी बढ़ गई। 'कला समेकित अधिगम' की वजह से उन्होंने खुद को और अधिक आत्मविश्वास और स्पष्टता से अभिव्यक्त करना शुरू कर दिया है। कला- गतिविधियों में उनकी रुचि के कारण वे समय पर विद्यालय आने लगे हैं और विद्यालय छोड़ने के अनिच्छुक हैं।

'कला समेकित अधिगम' ने विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सोचने के अवसर दिए हैं। जब उन्होंने कला की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया, तो वे और अधिक उत्साही बन गए, उनकी जिज्ञासा बढ़ गई, उन्होंने नई चीजों की खोज और निर्माण करना प्रारंभ कर दिया। उन्होंने स्वेच्छा से एक-दूसरे की सहायता और सहयोग करना शुरू कर दिया। 'कला समेकित अधिगम' द्वारा उन्होंने बिना किसी अतिरिक्त प्रयास के गणित और विज्ञान के 'अधिगम प्रतिफल' प्राप्त कर लिए हैं। अब वे कक्षा-परीक्षणों से डरते नहीं हैं। एक-दूसरे की बात सुनने, संवाद करने की उनकी क्षमता कई गुना बढ़ गई है।

कुल मिलाकर, 'कला समेकित अधिगम' ने विद्यालय के वातावरण में जीवन और उत्साह को जोड़ा है। एक ओर तो इसने उनकी अधिगम और मूल्यांकन के डर को दूर करने में मदद की, दूसरी ओर स्वयं को व्यक्त करने की उनकी उत्सुकता को भी बढ़ा दिया। इसने सभी बच्चों को स्थान और अवसर प्रदान किया है। अब मेरा स्कूल प्रगतिशील और आनंदपूर्ण अधिगम का मंच बन गया है।

विक्रम सोनबा अडसूल
राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2017
आईसीटी राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार विजेता 2017
जिला परिषद प्राथमिक विद्यालय, बन्दगारवस्ती, तालुका- कर्जत
जिला- अहमदनगर, महाराष्ट्र

एक शिक्षक के लिए आरंभिक कक्षाएं (कक्षा1 एवं 2) हमेसा चुनौतीपूर्ण रही हैं। विद्यालय की चहारदीवारी के अंदर नवप्रवेशी बच्चों को आनंददायी विद्यालयी माहौल उपलब्ध कराना मेरे लिए हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा। कक्षा में बच्चों के शोर, एक दूसरे से लड़ाई और फिर मुझसे उसकी शिकायत, कभी 1 नंबर (पेशाब करने) के लिए छुट्टी, काँख मे झोला दबाए कक्षा से भागने की तैयारी, मेरे चिल्लाने पर भी मुझे अनसुनी कर देना आदि मेरी दैनिक चुनौतियाँ थी। मैंने परिस्थितियों को संभालने की पूरी कोशिश भी की, परिणाम भी दिखा लेकिन सभी क्षणिक। हर प्रशिक्षण में मेरे बच्चे मेरे आँखों के सामने काँख में झोला दबाए कक्षा से भागने की मुद्रा में दिखाई देते थे, एक यक्ष प्रश्न के साथ- 'आखिर कब तक भागेंगे?'

वर्ष 2012 के अगस्त महीने में मै एनसीईआरटी की कला समेकित अधिगम की ट्रेनिंग के लिए पटना, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद के परिसर में उपस्थित था। दस रोजा प्रशिक्षण, हर रोज मेरी कई नासमझियों पर प्रहार करता, जो आज मेरे लिए, मेरे पास,मेरी हर कक्षाई जरूरतों का समाधान है। प्रशिक्षण के दौरान कला समेकित अधिगम की गतिविधियों और मैंने कक्षा में जो गतिविधियाँ कराई थीं, दोनों में बहुत फर्क नहीं था। फर्क था तो बस ये कि चित्रकारी तो मैंने कराई थी लेकिन कभी उनसे उन चित्रों, चित्रों की रेखाओं और रंगों में उलझे उनके विचारों, उनके पसंद-नापसंद आदि पर बात नहीं की, विविध आकृतियां तो बनवाई लेकिन उनके आकार, छोटा-बड़ा, दूर-नजदीक, जोड़ने-घटाने की समझ सहित अन्य गणितीय अवधारणाओं में कभी उनका उपयोग नहीं किया, बच्चों ने अपने पसंदीदा चित्र धरती-दीवारों से लेकर कागज़ तक बनाए लेकिन मेंने कभी उन चित्रों पर उनकी समझ, उनकी भाषा, उनके पूर्व ज्ञान, उनकी कल्पना-चिंतन आदि को न समझने की कोशिश की न ही शिक्षण प्रक्रिया में उनके उपयोग की। शिक्षण प्रक्रिया में इनके उपयोग और इनकी महत्ता परखने की दिव्य दृष्टि मुझे कला समेकित अधिगम ने दिया। शिक्षण प्रक्रिया में इन्हें शामिल करते ही सबकुछ बदल गया, जिन बच्चों को कक्षा में रोकने के लिए संघर्ष करना पड़ता था वे न सिर्फ रुके बल्कि दुनिया से बेखबर अपने मनपसंद चित्र के नीचे नाम या कुछ लिखने के लिए सफल संघर्ष करते दिख रहे थे। घंटी बजने पर अब हर कक्षा से आवाज आने लगी "माट साहेब हमनी के क्लास मे आई। खूब माजा आवेला (मास्टर साहेब हम लोगों की कक्षा में आइये। बहुत मजा आता है।)" यहीं मजा आनंद में सीखना है। एक प्रशिक्षण ने मेरे सभी सवालों का जवाब दे दिया था, अब न कोई यक्ष था न कोई यक्ष प्रश्न।

Thanks AIL.

डॉ सुमन कुमार सिंह
उ. मा. विद्यालय, कौड़िया बंसती
भगवानपुर हाट, सीवान(बिहार)

1.4 'कला समेकित अधिगम' के उद्देश्य

'कला समेकित अधिगम' में निहित शिक्षण-शास्त्र प्रत्येक बच्चे को उसकी गति के अनुसार सीखने की सुविधा देता है। सभी बच्चों की सीखने और विकासात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति कला के माध्यमों द्वारा प्रदर्शन और अभिव्यक्ति से सम्भव हो जाती है, चाहे वे विशेष जरूरतों वाले बच्चे हों, कमजोर सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले हों या फिर अलग-अलग संस्कृति वाले बच्चे हों। कला बच्चों के प्राकृतिक स्वभाव के साथ मेल खाती है और प्रकृति के साथ एक होकर जीने को बढ़ावा देती है। 'कला समेकित अधिगम' में किए जाने वाले खोज, अवलोकन और प्रयोग; अधिगम को प्रत्येक व्यक्ति के लिए मूर्त, सृजनात्मक और उपयोगी बना देते हैं।

विद्यार्थियों की कलाकृतियाँ उनके सामाजिक संदर्भों की जीवंतता को सामने लाती हैं। कला एक यात्रा है जहाँ विभिन्न व्यक्ति सहयात्री बन जाते हैं। वे एक दल (टीम) के रूप में साथ-साथ आगे बढ़ते हैं और एक दूसरे के साथ अपने अनुभव साझा करते हैं। इससे भाषा की बाधाएँ भी टूटती हैं क्योंकि कला की अपनी स्वयं की भाषा होती है। बच्चों को कला के माध्यम से विभिन्न पृष्ठभूमियों से संबंधित बाधाओं से परे जाकर आपस में संप्रेषण और संपर्क स्थापित करने में मदद करती हैं। इस तरह, कला की छोटी-छोटी गतिविधियों के द्वारा बच्चे सामाजिक वास्तविकताओं की विविधता और सह-अस्तित्व के बारे में सीखते हैं।

विद्यालय के उत्सवों जैसे; खेल दिवस, स्वास्थ्य मेला, विज्ञान मेले और अन्य पर्वों में कला के मात्र छू जाने भर से उल्लास, अपनापन और स्वागत की भावना आती है। विद्यालय-परिसर के विभिन्न भागों जैसे कक्षाओं, गलियारों, विभिन्न कमरों और खुले क्षेत्रों में, स्थानीय कलाओं और शिल्पों का समेकन करने से विद्यालय का वातावरण आकर्षक और बच्चों के अनुकूल तो बन ही जाता है, साथ ही बच्चों के घर और विद्यालय के बीच संबंध भी जुड़ जाता है। अधिगम के साथ कला का समेकन-

- 'उत्पाद' की अपेक्षा, 'प्रक्रिया' के अनुभव को बढ़ावा देता है
- शैक्षिक सामग्री के अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देता है
- अंत:विषयी सम्बन्धों को बढ़ावा देता है
- आत्म-चिंतन के लिए अवसर और स्वतंत्रता के साथ; अभिव्यक्ति को बढ़ावा देता है
- विभिन्न ज्ञान-क्षेत्रों (डोमेन) के विकास को बढ़ावा देता है
- विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि वाले बच्चों को 'साझा मंच' पर संवाद करने की संभावना को बढ़ावा देता है

- प्रत्येक बच्चे की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देता है
- सामाजिक कौशलों के विकास को बढ़ावा देता है जिससे विद्यार्थियों को एक दल (टीम) के रूप में काम करने का अनुभव मिलता है
- भावनात्मक अभिव्यक्ति और स्थिरता को बढ़ावा देता है
- विविधता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास की सराहना को बढ़ावा देता है
- अवलोकन, प्रयोग और वैज्ञानिक-मनोवृत्ति का विकास करता है
- राष्ट्रीय और सांस्कृतिक विरासत के लिए सौंदर्य-संवेदना और सम्मान की भावना को बढ़ावा देता है

1.5 स्तर अनुसार अधिगम उद्देश्य

'कला समेकित अधिगम' विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर संभव है। यह प्राकृतिक अनुभवात्मक है और सभी बच्चों की कल्पना और भावनात्मक क्षमताओं को प्रेरित करता है। आयु, सामाजिक संदर्भ और क्षमता के अनुसार बच्चों की आवश्यकताएँ भी बदल जाती हैं। 'कला समेकित अधिगम' के स्तरानुसार उद्देश्य नीचे दिए गए हैं।

1.5.1 पूर्व-प्राथमिक स्तर पर अधिगम-उद्देश्य

इस स्तर पर बच्चे अत्याधिक जिज्ञासु और ऊर्जावान होते हैं। ड्राइंग, पेंटिंग, मिट्टी का काम, संगीत जैसी सृजनात्मक गतिविधियाँ छोटे बच्चों के लिए रोचक और आकर्षक होती हैं। इस स्तर पर 'संपूर्ण शिक्षा कलाओं के माध्यम से होनी चाहिए'। दृश्य और प्रदर्शन कला में बच्चों की भागीदारी का उद्देश्य है-

- सीखने को आनंदमय और आकर्षक बनाना
- सूक्ष्म अवलोकन और बाधारहित अन्वेषण के माध्यम से पर्यावरण की जागरूकता और संवेदनशीलता को प्रोत्साहित करना
- स्वतंत्र अभिव्यक्ति, संप्रेषण और सृजनात्मक भागीदारी को प्रेरित करना

दो मंजिला घर खेलते हुए, जी. पी. स्कूल,कोलूखेड़ी, सिहोर,मध्य प्रदेश

रोल प्ले के द्वारा EVS सीखने के अनुभव
निगम प्रतिभा विद्यालय, नई चौखण्डी, नई दिल्ली

- स्वतंत्र रूप से और स्वत:स्फूर्त (spontaneously) अभिव्यक्ति के लिए बच्चों को सुविधा देना

1.5.2 प्राथमिक स्तर पर अधिगम-उद्देश्य

प्राथमिक स्तर पर कला-शिक्षा को सभी विषयों से इस प्रकार जोड़ने की आवश्यकता है कि यह विभिन्न अवधारणाओं के शिक्षण का प्रभावी साधन बन जाए। कला बच्चे की जिज्ञासा, कल्पना और विस्मय की भावना को मजबूत करने में प्रभावी भूमिका निभा सकती है। बौद्धिक, सामाजिक-भावनात्मक, गत्यात्मक, भाषायी और साक्षरता से संबंधित कौशलों पर कला का सकारात्मक प्रभाव होता है। प्राथमिक स्तर पर 'कला समेकित अधिगम' के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:-

- सीखने के लिए आनंद और उत्सुकता का अनुभव करना
- समावेशी वातावरण में रहना सीखना

- आसपास की दुनिया में गणित और विज्ञान की अवधारणाओं की खोज करना
- अंत:विषयी सम्बन्धों के बारे में जागरूक होना
- अवलोकन, जिज्ञासा, अन्वेषण, रचनात्मक और स्वतन्त्र अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना
- शरीर, उसकी गतियों और समन्वय का पता लगाना और समझना
- सृजन, भावपूर्ण संप्रेषण और आलोचनात्मक चिंतन के कौशलों का विकास करना
- अधिगम और ज्ञान के प्रति जिज्ञासु अभिवृत्ति को बढ़ावा देना
- अपनी भावनाओं को समझना और उन्हें नियंत्रित करना
- समृद्ध विरासत और सांस्कृतिक विविधता के प्रति संवेदनशील बनाना एवं जागरूकता उत्पन्न करना

1.5.3 उच्च प्राथमिक स्तर पर अधिगम-उद्देश्य

इस अवस्था के दौरान बच्चे अवधारणाओं और परिवेश के बीच अधिक जटिल अंतर्संबंधों को समझने के लिए तैयार होते हैं। 'कला समेकित अधिगम' बच्चों को सार्थक रूप से सरल अवधारणाओं के आधार पर नई अवधारणाओं का निर्माण करने और उन्हें शैक्षणिक सामग्री से जोड़ने के लिए प्रेरित करता है। बच्चे समूहों में काम करने के कौशलों को विकसित करते हैं। वे नए विचारों और संदर्भों (थीम) को मिलकर तलाशने के कौशलों का परिष्कार भी करते हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर बच्चों की सहायता के लिए 'कला समेकित अधिगम' के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- अवधारणाओं के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों का पता लगाना
- विषय एवं प्रसंग का ज्ञान अर्जन एवं विषयों में आपसी संबंध के बारे में जागरूकता उत्पन्न करना
- बहुलवादी दृष्टिकोण विकसित करना और विविध संभावनाओं की सराहना करना
- सामूहिक प्रयासों (टीम वर्क) और एक-दूसरे की सराहना करने की संस्कृति को बढ़ावा देना
- संप्रेषण, भाषा और समस्या-समाधान के कौशलों को बढ़ावा देना
- पर्यावरण और सामाजिक सरोकारों के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना
- कला करना एवं कलात्मकता का दिन प्रतिदिन के कार्यकलापों में उपयोग करना
- दूसरों के सम्मान, देखभाल, सहानुभूति और करुणा के समावेशी व्यवहार को प्रोत्साहित करना

- सामाजिक-भावनात्मक दक्षताओं और संज्ञानात्मक क्षमता को बढ़ावा देना
- समृद्ध विरासत और सांस्कृतिक विविधता के प्रति संवेदनशील बनाना एवं जागरूकता उत्पन्न करना
- अपनी भावनाओं को समझना और उन्हें नियंत्रित करना

गणित की अवधारणाएं सीखते हुए
मिडिल स्कूल,नथूनी अहीर का डेरा, ब्लाक डूमराव, जिला बक्सर (बिहार)

जब सीखना मजेदार हो जाता है; कक्षा गतिविधि
निगम प्रतिभा विद्यालय, नाँगलोई सैदान,नई दिल्ली

2

कार्यान्वयन की रणनीतियाँ

कला समेकित अधिगम दृश्य और प्रदर्शन कला के माध्यम से बच्चों को विभिन्न संदर्भों और अवधारणाओं की छानबीन करने के अनूठे अवसर प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में, कला सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन जाती है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि पानी के संदर्भ में बच्चों के सामने यह प्रश्न है- 'पानी कहाँ से आता है?' इसके उत्तर में बच्चे चित्र बनाते हैं। वे गंदे नाले के पानी के लिए काले और नदी के लिए नीले रंग का प्रयोग करते हैं। इस बिंदु पर, शिक्षक के पास यह कौशल होना चाहिए कि वह बच्चों के कला-अनुभव को समझ सके और उसे विषय सीखने से जोड़ सके। इसके लिए शिक्षक कह सकते हैं कि "चलो, नदी के स्रोत का पता लगाते हैं!" इसके बाद सीखने-सिखाने के निर्माणवादी (constructivist) दृष्टिकोण को सामने लाते हुए वे नदी के स्रोत का पता लगाने के लिए गति, संगीत और रंग का सुझाव दे सकते हैं।

यद्यपि कलात्मक अनुभव में पर्याप्त लचीलापन होता है, और बच्चे प्रयोग और अन्वेषण की प्रक्रिया द्वारा ही सीखते हैं; फिर भी 'कला समेकित अधिगम' के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए शिक्षक की तैयारी का मूलभूत ढांचा होना आवश्यक है। 'कला समेकित अधिगम' के लाभों को पूरी तरह केवल तभी प्राप्त किया जा सकता है जब इसके सभी हितधारकों की दक्षता का विकास किया जाए और उन्हें इसके लिए तैयार किया जाए। इसलिए, 'कला समेकित अधिगम' के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए निम्नलिखित चरणों का सुझाव दिया जा रहा है-

- दक्षता-विकास करना
- गतिविधियों की योजना बनाना
- समय की योजना बनाना
- संसाधनों की योजना बनाना
- कक्षा- प्रबंधन
- समुदाय की भागीदारी

2.1 दक्षता-विकास करना

कला को संसाधन के रूप में प्रस्तुत करने के लिए विद्यालयी व्यवस्था के पुन: उन्मुखीकरण (re-orientation) की आवश्यकता होगी ताकि कला का उपयोग शिक्षण-शास्त्रीय साधन के रूप में किया जा सके। इस शिक्षण-शास्त्र के महत्व और प्रासंगिकता को समझने के लिए विद्यालयी शिक्षा के सभी हितधारकों का उन्मुखीकरण आवश्यक है, जिसमें विद्यालय का प्रबंधन-वर्ग भी सम्मिलित है। अपने विद्यालय में 'कला समेकित अधिगम' को लागू करने के लिए शिक्षकों एवं दूसरे का समझने का कौशल और विशेषज्ञता को बेहतर बनाने के लिए किए जा रहे किसी भी प्रयास को दक्षता-विकास कहा जा सकता है। यह विद्यालय की आंतरिक क्षमताओं का निर्माण करता है और बाहर की सहायता या सेवाओं पर उसकी निर्भरता को कम करता है। विद्यार्थियों के सीखने के तरीके और सीखने-सिखाने को लेकर शिक्षकों के दृष्टिकोण में आमूल-चूल बदलाव लाने के लिए शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यशालाएँ और शिक्षक-अवलोकन कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। इससे शिक्षकों को स्वयं उस सामग्री की गहरी वैचारिक समझ हो जाएगी, जिसे सिखाने की उनसे अपेक्षा की जाती है। सीखने का समुचित वातावरण बनाने के लिए उपयुक्त कौशलों की शिक्षण-शास्त्रीय समझ भी उन्हें हो जाएगी।

2.1.1 शैक्षिक प्रशासकों और विद्यालय प्रमुखों का अभिविन्यास

'कला समेकित अधिगम' अनुभवात्मक और आनंदपूर्ण अधिगम का शिक्षण-शास्त्र है। इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए विद्यालय के प्राचार्य/विद्यालय-प्रमुख सहित सभी शैक्षिक प्रशासकों को इसकी प्रासंगिकता के बारे में जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। इन सभी को अनुकूल वातावरण बनाने में सहायता करनी चाहिए ताकि सही अर्थों में 'कला समेकित अधिगम' का कार्यान्वयन किया जा सके।

2.1.2 'कला समेकित अधिगम' के शिक्षण-शास्त्र में सभी शिक्षकों का प्रशिक्षण

इस शिक्षण-शास्त्र के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए, शिक्षक को निम्नलिखित पक्षों में पर्याप्त प्रशिक्षण दिए जाने की आवश्यकता होगी:-

- 'कला समेकित अधिगम' की तकनीकों में अनुभव-आधारित प्रशिक्षण: यह प्रशिक्षण सभी शिक्षकों (जिनमें कला शिक्षक भी सम्मिलित हैं) को यह समझने में समर्थ करेगा कि कला के विभिन्न रूप रोचक तरीकों से विद्यार्थी को कैसे प्रसन्न, चौकस, अभिव्यक्तिवान, जिज्ञासु और उत्सुक अवलोकनकर्ता बना देते हैं। वे यह भी समझ सकेंगे कि 'कला समेकित अधिगम' बच्चों को अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करने के लिए कैसे प्रेरित करता है।
- 'कला समेकित अधिगम' की अवधारणा को शिक्षण-शास्त्र के रूप में समझना
- अधिगम के माध्यम के रूप में कला का उपयोग करते हुए 'समावेशी कक्षाओं' की रचना करने के कौशल
- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के अंग के रूप में विविध कला-रूपों की विभिन्न विधियों और सामग्री का स्वयं उपयोग करने का प्रशिक्षण
- 'कला समेकित अधिगम' की गतिविधियों की योजना बनाना और उनका संचालन करना
- कला-शिक्षा, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा सहित विभिन्न विषयों के शिक्षकों के साथ मिलकर सीखना-सिखाना
- कम लागत वाले और स्थान-विशिष्ट संसाधनों का निर्माण
- 'कला समेकित अधिगम' का उपयोग आकलन के उपकरण के रूप में करना
- बच्चों के काम की प्रस्तुति और प्रदर्शनी का कौशल

2.1.3 समुदाय का संवेदीकरण

बच्चों के अधिगम और विकास में समुदाय बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए, समुदाय द्वारा शिक्षण-शास्त्र के रूप में 'कला समेकित अधिगम' के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए इसकी स्पष्ट समझ अत्यंत आवश्यक है। बच्चों के माता-पिता समुदाय का वह भाग है जो इससे सीधे-सीधे जुड़ा है। अत: यह अनुशंसा की जाती है कि 'कला समेकित अधिगम' के शुभारंभ से पहले विद्यालय बच्चों के माता-पिता के लिए संक्षिप्त-सत्रों का आयोजन करे ताकि वे अपने बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति अपनी भूमिका को पहचान सकें।

प्रशिक्षण के स्रोत

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राज्यों के अनुरोध पर मास्टर-प्रशिक्षकों/ राज्य संसाधन समूह (एसआरजी) को 'कला समेकित अधिगम' में प्रशिक्षित कर सकता है जो आगे अन्य शिक्षकों को प्रशिक्षित कर सकते हैं।

विभिन्न राज्यों के 'राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्'/'मंडलीय शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान'/'शिक्षा निदेशालय' अपने शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्' के 'कला समेकित अधिगम' प्रशिक्षण पैकेज का उपयोग करते हुए अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम स्वयं आयोजित कर सकते हैं।

2.2 गतिविधियों की योजना बनाना

एक बार जब शिक्षक 'कला समेकित अधिगम' पद्धति का उपयोग करने का निर्णय कर लेता है, तो उसे उसकी योजना पर भी काम करना होता है। 'कला समेकित अधिगम' का उपयोग करते समय कला अनुभव तकनीक को विषयवस्तु से जोड़ने के तरीकों को पहचानना शिक्षक के लिये आवश्यक है। निम्नलिखित कौशल शिक्षक की इस यात्रा को सही मार्ग पर बनाए रखेंगे-

- उसकी पूर्व-योजना
- विषय-वस्तु के साथ उसका परिचय
- बच्चों की प्रतिक्रियाओं को निदेशित करने और उनकी समीक्षा करने के प्रति उसकी सतर्कता

ज्यामितीय आकारों का सीखना- बाहरी गतिविधियाँ
कल्यानजिनू पारू कुमार प्राथमिक विद्यालय, आदाराज मोती, गांधीनगर, गुजरात

'कला समेकित अधिगम' की गतिविधियों की स्तरानुसार योजना

2.2.1 पूर्व-प्राथमिक

जैसा कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 द्वारा सुझाया गया है, इस स्तर पर संपूर्ण शिक्षा कलाओं के माध्यम से होनी चाहिए: चित्रकारी, रंग भरना, मिट्टी से वस्तुएँ बनाना, गायन, क्रियाएँ (एक्शन या मूवमेंट)। यह आगे और बल देते हुए कहती है कि पाठ्यक्रम का 90% भाग कला-आधारित होना चाहिए। इसलिए, इस चरण के लिए गतिविधियों की योजना बनाते समय, शिक्षक को उपरोक्त मानदंडों को ध्यान में रखना चाहिए। इस चरण के लिए एक और महत्वपूर्ण बिंदु है- 'उत्पाद' की अपेक्षा 'प्रक्रिया' पर ध्यान केंद्रित करें।

इस स्तर के लिए कुछ सुझावात्मक कार्य निम्नलिखित हैं:-

- लय और ताल में कविताएँ/शिशु-गीत जिन्हें बच्चे क्रियाओं और गाने के माध्यम से सीखते हुए आनंद लेते हैं। कविताएँ बच्चों के आसपास के वातावरण के विषयों पर आधारित होनी चाहिए। ऐसी कविताएँ बच्चों के श्रवण और दृश्य कल्पना के बोध को विकसित करने में मदद करेंगी।

- सामान्य रूप से पाई जाने वाली वस्तुओं के माध्यम से विभिन्न ध्वनियों की खोजबीन करना। इससे बच्चों को शोर और संगीत के बीच अंतर करने में मदद मिल सकती है।

इस चरण के लिए गतिविधियों की योजना बनाते समय, स्थानीय रूप से उपलब्ध; और बच्चों की आयु के लिए उपयुक्त सामग्री का उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए जैसे; कंकड़, बीज, मोती, पत्तियाँ, फूल, रेत, मिट्टी, सीपियाँ, पंख, लकड़ी की डंडियाँ, पेड़ की छाल, प्राकृतिक रंग आदि।

2.2.2 प्राथमिक

प्राथमिक स्तर पर, कला को सभी विषयों के साथ समेकित किया जाना चाहिए और विभिन्न अवधारणाओं के सीखने-सिखाने के माध्यम के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए। इससे बच्चों को अपने विचारों और भावनाओं को खुलकर व्यक्त करने में मदद मिलेगी। इसके द्वारा सूक्ष्म-अवलोकन, उत्सुकतापूर्ण अन्वेषण और सहज अभिव्यक्ति को बढ़ावा मिलेगा और उनकी सभी इंद्रियों का विकास हो सकेगा। जैसा कि हमारे अधिकांश प्राथमिक विद्यालयों में व्यवस्था है, एक शिक्षक अपनी कक्षा में सभी विषयों को पढ़ाता है। इससे उसे कला-अनुभवों की योजना बनाने की स्वतंत्रता और अवसर मिल सकते हैं और वह विभिन्न विषयों के अधिगम में कला का उपयोग कर सकता है। इस चरण के लिए गतिविधियों की योजना बनाते समय, शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिए कि:

- 'उत्पाद' की अपेक्षा 'प्रक्रिया' पर ध्यान केंद्रित करें।
- कला का अनुभव योजनाबद्ध और ऐसा होना चाहिए कि यह कक्षा की बहुस्तरीय आवश्यकताओं की पूर्ति करे और अधिगम के अंतःविषयक उद्देश्यों को पूरा करे।
- बहु-स्तरीय कक्षाओं (ऐसी कक्षाएँ जहाँ विभिन्न स्तरों के विद्यार्थी हैं) के मामले में, शिक्षक को समूहों की संरचना पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि गतिविधियों की रचना का एक प्रमुख आधार-बिंदु, बच्चों का आयु-समूह होता है।
- समावेशी कक्षाओं की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।
- कक्षा 1-3 और 4-5 में कला का समेकन क्रमशः 80 और 70 प्रतिशत होना चाहिए। (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005)
- कक्षा 1 और 2 के बच्चों को सामग्री के साथ स्वतंत्र छोड़ दिया जाना चाहिए ताकि वे उससे प्रयोग करें और अपने आसपास के विषय और परिस्थितियों को व्यक्त कर सकें।
- कक्षा 3 और उससे आगे, उन्हें अपने दैनिक जीवन और अपने आसपास के परिवेश से संबंधित सरल विषय दिए जा सकते हैं जो उनके पाठ्यक्रम को भी पूरा (कवर) करते हों।

मिट्टी- संसाधन के रूप में
मण्डल परिषद प्राथमिक विद्यालय,उपवनका गाँव, कल्यानदुर्ग मण्डल, अनन्तपुर,आन्ध्र प्रदेश

2.2.3 उच्च प्राथमिक

उच्च प्राथमिक स्तर पर, विद्यार्थी की कल्पना और उनके सृजनात्मक भावों के विकास पर बल दिया जाना चाहिए। यह माना जाता है कि इस चरण के बच्चे अपने सामाजिक-भावनात्मक विकास और जीवन कौशलों (अंतर-वैयक्तिक संप्रेषण, सहयोग और सहकार्य, विविधता का सम्मान और एक-दूसरे के दृष्टिकोण की सराहना, नेतृत्व-कौशल विकसित करना, समस्या-समाधान की क्षमताएँ) में वृद्धि के लिए समूहों में मिलकर काम करते हैं। चूंकि यह आयु किशोरावस्था की शुरुआत का समय है, इसलिए उनकी बढ़ती चिंताओं को भी कला के समेकन से स्वाभाविक और प्रभावी रूप से संबोधित किया जा सकता है।

'कला समेकित अधिगम' की गतिविधियों की योजना बनाते समय कला-शिक्षा सहित विभिन्न विषयों के शिक्षकों के बीच उचित सहयोग का होना बहुत महत्वपूर्ण है। इस सहयोग से सीखने-सिखाने के समय का कुशल प्रबंधन करने और अंतःविषयी उपागम को बढ़ावा देने में शिक्षकों को सहायता मिलेगी।

इस चरण के लिए गतिविधियों की योजना बनाते समय, शिक्षक को यह भी देखना चाहिए कि:

- 'प्रक्रिया' पर ध्यान केंद्रित हो न कि 'उत्पाद' पर।
- समावेशी कक्षाओं की जरूरतों का ध्यान रखना चाहिए।
- समूह बनाते समय उन्हें विविधतापूर्ण तरीकों का पालन करना चाहिए ताकि यह

सुनिश्चित किया जा सके कि सामाजिक पूर्वग्रह और लैंगिक रूढ़ियों के आधार पर बच्चों के साथ कोई भेदभाव न हो।

- विचारों के बेहतर आदान-प्रदान और विभिन्न शिक्षण-स्तरों के समायोजन के लिए समय-समय पर बच्चों के समूहों को बदलते रहना चाहिए।
- एकरसता से बचने के लिए बच्चों को विविध कला-रूपों और सामग्री का उपयोग करने के अवसर मिलने चाहिए।
- खोजबीन के उपकरण के रूप में 'सूचना और प्रौद्योगिकी' (आईसीटी) को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- बच्चों को स्थानीय/क्षेत्रीय कारीगरों/दस्तकारों/शिल्पकारों आदि के साथ बातचीत करने के अवसर प्रदान किए जायें ताकि वे स्वदेशी सांस्कृतिक विरासत के प्रति अपनी संवेदनशीलता और जागरूकता बढ़ा सकें।
- संग्रहालयों, दीर्घाओं, ऐतिहासिक स्मारकों, मेलों, बाज़ारों, हाट आदि स्थानों के क्षेत्र-भ्रमण का समेकन किया जाये।
- यह चिन्तन करना चाहिए कि अवधारणा और विषय-सामग्री से जोड़ने के लिए कला-अनुभव को किस सीमा तक ले जाया जा सकता है।
- 'कला अनुभव को आकलन के उपकरण के रूप में' भी उपयोग करें।

कला-शिक्षा में विद्यार्थी को अपने साथ जोड़ने का अंतर्निहित गुण होता है। इस गुण के कारण कला-शिक्षा सृजनात्मक अभिव्यक्ति का संतोषजनक माध्यम बन सकती है। जहाँ एक ओर विद्यार्थी कला का प्रदर्शनकर्ता होता है, वहीं दूसरी ओर वह अवलोकनकर्ता भी होता है। ये दोनों ही कार्य विद्यार्थी के मस्तिष्क को सक्रिय करते हैं।

2.2.4 'कला समेकित अधिगम' की गतिविधि लिखने के लिए सुझावात्मक प्रारूप:

नीचे 'कला समेकित अधिगम' की गतिविधि की योजना का एक सुझावात्मक प्रारूप दिया गया है। शिक्षक अधिगम-स्थितियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना स्वयं सोच सकते हैं या उसे तैयार कर सकते हैं। सुझाया गया प्रारूप कार्य-क्षेत्र में 'कला समेकित अधिगम' की गतिविधियों के लिए सामान्य रूप से उपयोग किए जाने वाले प्रारूप पर आधारित है:-

- **कक्षा:** जिस कक्षा के लिए पाठ-योजना तैयार की गई है, उसका उल्लेख किया जाना चाहिए।

- **विषय:** जिन विशिष्ट विषयों के लिए गतिविधि की योजना बनाई जा रही है, उनका उल्लेख किया जाना चाहिए।
- **थीम/अध्याय:** इन्हें किसी भी विषय (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005) के संदर्भों (थीम) के आसपास विकसित किया जा सकता है क्योंकि इससे विषय की सीमाओं के परे जाने और ज्ञान को समग्र रूप से प्राप्त करने में सहायता मिलती है। यह विविध प्रकार की अवधारणाओं, मुद्दों और कौशलों को प्राप्त करने में भी सहायता करता है।
- **कला रूप/रूपों- जिनका उपयोग किया जा रहा है:** यहाँ शिक्षक स्पष्ट कर सकता है कि जिस कला-रूप का उपयोग किया जा रहा है वह दृश्य कला है, प्रदर्शन कला है या दोनों हैं।
- **आवश्यक समय:** यह आवश्यक है कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक समयबद्ध योजना पर काम करे। हालांकि, अगर किसी बच्चे या समूह को अधिक समय की आवश्यकता हो, तो बच्चों की व्यक्तिगत गति का सम्मान करते हुए इसकी अनुमति दी जानी चाहिए।
- **कला अनुभवों/गतिविधियों की चरणबद्ध योजना बनाना:** बच्चों के लिए 'कला समेकित अधिगम' पर आधारित गतिविधियों की योजना तैयार करने के लिए कला-अनुभवों के बारे में अच्छी तरह सोच-विचार करना आवश्यक है। कुछ कला-अनुभव 'आइस-ब्रेकर' के रूप में हो सकते हैं जो 10 से 15 मिनट में आयोजित और पूरे किए जा सकते हैं और अन्य कला-अनुभवों की अवधि लंबी भी हो सकती है ताकि योजना के 'अधिगम उद्देश्यों' और 'अधिगम प्रतिफलों' को प्राप्त किया जा सके।
- **अनुवर्ती (Follow up) क्रियाकलाप:** प्रत्येक 'कला-अनुभव' में अनुवर्ती क्रियाकलाप होने चाहिए, जो प्रश्न-उत्तर, विचार-मंथन की गतिविधियों, प्रेजेंटेशन/प्रदर्शन आदि के रूप में हो सकते हैं। अधिक विवरण के लिए शिक्षक इस दस्तावेज़ के पृष्ठ संख्या 47 में दिए गए उदाहरणों को देख सकते हैं।
- **आंकलन:** शिक्षण-शास्त्र के रूप में 'कला समेकित अधिगम'; 'अधिगम के रूप में आकलन', 'अधिगम के लिए आकलन' और 'अधिगम का आकलन' के लिए अवसर और स्थान प्रदान करता है। इसलिए 'कला समेकित अधिगम' की योजना तैयार करते समय शिक्षक आकलन और अभिलेखों के रखरखाव के लिए आसान और सहज तरीकों के बारे में भी सोच सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए कृपया पृष्ठ संख्या 37 देखें।

- **अवधारणाओं या संदर्भों (थीम) के साथ कला-अनुभवों को जोड़ना:** 'कला समेकित अधिगम' की योजना तैयार करते समय शिक्षक उन उपयुक्त बिंदुओं के बारे में सोच सकते हैं जहाँ लक्षित संदर्भ (target theme) या अवधारणा को बच्चे के कला-अनुभव के साथ सहज रूप से जोड़ा जा सकता है।

2.3 समय-योजना

समय-प्रबंधन, हर स्तर पर शिक्षकों की व्यावसायिक क्षमता और उत्पादकता का एक महत्वपूर्ण पहलू है। समय की कमी के कारण शिक्षकों के लिए कभी-कभी कला अनुभवों के आयोजन के लिए समय निकालना मुश्किल हो जाता है। इसके कारण अधिगम के लिए एक आनंदमयी और अनुभव-आधारित वातावरण बनाने में समझौता करना पड़ता है। इसके विपरीत, विद्यालय में कई दिलचस्प गतिविधियों के लिए समय उपलब्ध रहता है जैसे सुबह की प्रार्थना सभा, उत्सव समारोह, विशेष सभाएँ और भ्रमण आदि, जिन्हें कला समेकित अधिगम से जोड़ कर विषय और सीखने की प्रक्रिया को समग्र बना सकते हैं। समय की योजना बनाने के लिए कुछ सुझाव आगे दिये जा रहे हैं।

2.3.1 वार्षिक कैलेंडर की योजना

वार्षिक कैलेंडर की योजना बनाते समय स्कूल टीम, हर स्कूल में उपलब्ध निम्नलिखित समय-अवधि को ध्यान में रख सकती है और उस समय का उपयोग कला समेकित शिक्षा के लिए किया जा सकता है

- **सुबह की प्रार्थना सभा:** यह स्कूल में दिन की शुरुआत का सबसे अच्छा समय होता है। सुबह की सभा का यह समय अधिगम के लिए बहुत प्रभावकारी हो सकता है यदि इसे कक्षाओं के लिए निर्धारित विषय-वस्तु और प्रसंग (थीम) से जोड़ दिया जाए। उदाहरण के लिए सौर-मण्डल पर कक्षा होनी है, शिक्षक सभी बच्चों के साथ इस पर कोई रोल-प्ले या अभिनय कर सकती है। एक विषय-वस्तु/थीम को एक या दो सप्ताह तक भी चलाया जा सकता है। जिससे एक विषय के विभिन्न पहलुओ के बारे में समझा जा सके। एक तरफ, इससे शिक्षकों को अधिगम के लिए अधिक समय और दूसरी तरफ हर बच्चे को विद्यालय में अधिगम का आंनदमई वातावरण मिल जाता है।
- **शून्य-खंड (ज़ीरो पीरियड):** यह पंद्रह से बीस मिनट की वह समय अवधि होती है जो या तो पहले पीरियड के बाद होती है या आखिरी पीरियड के बाद होती है या स्कूल समाप्ति के पहले होती है। इस समय का उपयोग कला-आधारित आइस-ब्रेकर

कला समेकित प्रार्थना सभा
निगम प्रतिभा विद्यालय, नाँगलोई सैदान, नई दिल्ली

या गतिविधि के जरिये किसी अवधारणा को समझाने के लिए किया जा सकता है। (आइस-ब्रेकर गतिविधियों पर अधिक जानकारी के लिए URL प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण पैकेज देखें)।

- **विशेष आयोजन और समारोह:** स्कूल के वार्षिक कैलेंडर में बहुत से समारोह और विशेष आयोजन सुनिश्चित होते हैं जैसे बाल दिवस, शिक्षक दिवस और पर्यावरण दिवस, राष्ट्रीय त्योहार जैसे, गणतन्त्र दिवस, स्वतन्त्रता दिवस और गांधी जयंती, त्योहार जैसे कि होली, दिवाली, ईद, क्रिसमस, बैसाखी, बसंत उत्सव, गुरु-परब या ओणम जो विषय सामग्री से जुड़ते हैं और कला के विभिन्न रूपों के माध्यम से अभिव्यक्ति के जबरदस्त अवसर प्रदान करते हैं। इसे उपयुक्त कला अनुभव बनाने के लिए विचारशील और उचित योजना की आवश्यकता होती है। यह गतिविधियां स्कूलों को सांस्कृतिक विरासत को बचाने और संरक्षित करने में मदद कर सकती हैं जो कई अन्य कारणों के कारण प्रभावित होती हैं।
- **बाल-सभा:** यह रचनात्मक और अर्थपूर्ण कला के लिए स्थान देता है, जहां विद्यालय के हर बच्चे को यह अवसर मिलता है कि वह अपनी प्रतिभा का

बाल सभा
मिडिल स्कूल, नथूनी अहीर का डेरा, ब्लाक डूमराव, जिला बक्सर (बिहार)

प्रदर्शन कर सके। बाल-सभा में बच्चों को कम्पोज़ करके कविता सुनाने, सामान्य ज्ञान और अन्य विषयों पर उनके विचार, ग्रीटिंग कार्ड बनाना, गायन, नृत्य, नाटक, मिमिकरी, कठपुतली आदि के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इस तरह से, हर सप्ताह बाल सभा के इस आधे दिन को अनुभवात्मक सीखने के लिए आसानी से उपयोग किया जा सकता है।

- **मध्याह्न् भोजन/भोजन अवकाश और अल्प अवकाश:** जब बच्चे भोजन अवकाश पर जाते है इस समय का उपयोग करते हुए स्कूल, सकारात्मक और आनंदमई वातावरण बनाने के लिए उनके उम्र के अनुसार लोकप्रिय संगीत बजा सकता है। शोध बताते हैं कि इससे बच्चों में बेहतर ग्रहणशीलता आती है। यह बच्चों में शांति की भावना विकसित करने में भी मदद करता है।

- **स्कूल की पत्रिका:** कला की अभियक्ति के लिए दीवार और छपी हुई पत्रिका दोनों में पर्याप्त संभावना होती है। लिखित सामग्री जैसे- कहानी ,कवितायें, कार्यक्रमों की रिपोर्टिंग, जीवन पर आधारित अनुभव, फोटोग्राफ, पेंटिंग/चित्रांकन और कॉमिक स्ट्रिप आदि बच्चों को आनंदमई अधिगम के अनगिनत अवसर प्रदान करती हैं और इन्हें पाठ्यक्रम की थीम से भी जोड़ा जा सकता है।

- इसी तरह अंतर-स्कूल प्रतियोगिताएं, हाउस-प्रतियोगिताएं, फील्ड-ट्रिप भी आयोजित की जा सकती हैं।

2.3.2 समय-सारणी की योजना:

उच्च प्राथमिक स्तर पर कक्षा में विषयवार समय-सारणी की योजना बनाते समय, कला समेकित अधिगम के लिए निर्धारित समय का प्रावधान होना चाहिए। निश्चित समयावधि जिसमें एक से अधिक पीरियड का समय हो, बच्चों में निर्बाध गति से अधिगम को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है। इसे हर विषय में महीने में कम से कम एक बार लागू किया जा सकता है। दो कलांशों को जोड़ने के लिए अथवा अधिक समयावधि के लिए अंतर-संबन्धित विषयों से गतिविधियों की योजना बनाई जा सकती है ताकि दो या उससे अधिक शिक्षक एक टीम की तरह काम कर सकें। प्राथमिक सेक्शन में किसी एक शिक्षक के पास ही पूरी कक्षा की ज़िम्मेदारी होती है तो शिक्षक कालांश को जोड़ कर इसका उपयोग अपनी पसंद की गतिविधि करवाने के लिए कर सकता है।

टीम -वर्क और सामूहिक शिक्षक अधिगम

उच्च प्राथमिक कक्षाओं में सामूहिक अधिगम पद्धति से किया गया अधिगम अधिक लाभकारी होता है। यह सभी विषयों के शिक्षकों (कला शिक्षा सहित) को एक संकोच रहित वातावरण में अपने विषयों के अलावा दूसरे विषयों को समझने की तरफ प्रेरित करता है जिससे बच्चों में विषय को ले कर एक बेहतर समझ बनती है। शोध भी इसका समर्थन करते हैं कि इससे शिक्षकों को आत्मविश्वास और सामाजिक-भावनात्मक स्थिरता हासिल करने में मदद मिलती है।

2.4 संदर्भ संबंधी योजना:

सही योजना बना कर संसाधनों का उपयोग कला समेकित अनुभव में नवीनता लाता है। शिक्षक द्वारा किए जा रहे नियमित प्रयोग और व्यापक ग्राउंडवर्क, उन्हें संसाधनों का एक समृद्ध भंडार बनाने में मदद करते हैं जिसमें क्षेत्रीय/स्थानीय संसाधन शामिल होते हैं। संसाधन, उपयोग करने में आसान और सुविधाजनक होने चाहिए। उनकी आसान उपलब्धता से उसका अधिक से अधिक उपयोग होने लगता है। शिक्षकों को ऑन-लाइन उपलब्ध सामग्री और उसके सही उपयोग की भी जानकारी होनी चाहिए। संसाधनों के चयन के समय विशेष रूप से भौतिक संसाधनों के मामले में यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसमें लचीलापन रहे।

2.4.1 संसाधन के प्रकार:

1. **भौतिक संसाधन:** सभी तरह की गतिविधियों के लिए वस्तुओं, यंत्रों और संसाधनों के चयन की योजना बनाते समय इन पाँच चीजों को ध्यान में रखा जाना चाहिए:-

स्थानीय संसाधन- बच्चे नारियल पत्तियों के साथ कला करते हुए
कोय्यम ए. एल. पी. स्कूल, कोय्यम, करीमबाम, कन्नूर, केरल

(i) किफ़ायती
(ii) पर्यावरण अनुकूल,
(iii) बार-बार प्रयोग में आने वाला,
(iv) अभिनव और
(v) स्थानीय स्तर पर सरल उपलब्धता।

संसाधनों के कुछ उदाहरण:-

- पुराने पत्र-पत्रिकाएँ, समाचार-पत्र, पुरानी कॉपीयों के पन्ने, उपयोग हो चुके कागज़ के लिफाफे, पेकेजिंग सामग्री आदि
- पुराने या खराब हो चुके कपड़े, पुराने मोज़े, दुपट्टा/साड़ियाँ आदि
- गीली मिट्टी, उपयोग हो चुके सूती और रेशमी धागे, मनके, रंग -बिरंगे फीते आदि
- पुरानी चूड़ियाँ, बिंदी आदि
- कई तरह की पुरानी चिमटियाँ (फिश क्लिप), पुराने बटन आदि

- नारियल का खोल, पिस्ता के बीज का खोल, अखरोट/बादाम का खोल आदि
- कंकड़, छाल, पंख, रेत, बांस और झाड़ू आदि
- गत्ते का पुराना खोखा, पुराने निमंत्रण पत्र, गुब्बारे, गेंद, स्पंज आदि

आई सी टी– पर आधारित संसाधन

शिक्षक और विद्यार्थी सामग्री और गतिविधियों संबंधी उदाहरणो की जानकारी के लिए आईटीसी संसाधनों जैसे कम्पुटर और इंटरनेट का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। बेहतर परिणाम के लिए संदर्भ सामग्री के रूप मे कुछ श्रवण-दृश्य सामग्री का उपयोग भी किया जा सकता है। मनोरंजक और शैक्षिक उद्देश्यों के लिए फिल्मों और लघु वीडियो का प्रयोग भी किया जा सकता है। राष्ट्रीय शैक्षिक संसाधन जैसे ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (एनआरओईआर) को कला समेकित अधिगम के उद्देश्यों के लिए उपयोग में लाया जा सकता है।

2. **सामुदायिक संसाधन:** स्कूल और समुदाय के बीच अच्छे, स्वस्थ और सार्थक संबंध और भागीदारी विकसित करने के लिए रास्ते खोजे जाने चाहिए। स्थानीय कलाकारों और कारीगरों के संपर्क में आने से विद्यार्थियों में देशज चीजों और सांस्कृतिक धरोहर के प्रति संवेदनशीलता और जागरूकता बढ़ती है। उदाहरण के लिए स्कूल प्रबंधन स्थानीय बुनकर, कुम्हार और विभिन्न सेवा प्रदाताओं को आमंत्रित कर सकता है ताकि छात्रों का उनके साथ जुड़ाव हो सके। बच्चों के परिवार भी बच्चों के सीखने में सहायता करने के लिए स्कूल के साथ सकारात्मक तरीके से शामिल हो सकते हैं। प्रभावी और सार्थक सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए एक समयावधि के बाद भ्रमण, विभिन्न कार्यस्थलों के दौरे जैसे अस्पतालों, डाकघर, बस डिपो, रेलवे स्टेशन आदि भी शामिल हैं, आयोजित किए जा सकते हैं।

3. **स्थान:** यह देखा गया है कि पारंपरिक तैयारी में सीखना कुछ विशिष्ट क्षेत्रों तक ही सीमित होता है, जबकि कला समेकित अधिगम में शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह अधिगम के लिए स्थान चुनने के दौरान अधिक लचीला रहे। स्थान ऐसा होना चाहिए जो बच्चों को स्वतंत्र रूप से स्वयं को तलाशने, प्रयोग करने, बनाने और व्यक्त करने का अवसर प्रदान करें। उदाहरण के लिए किसी भवन की दीवार, सीढ़ी, विद्यालय के मंच एवं छत, मैदान और पार्क आदि का उपयोग भी इसके लिए किया जा सकता है।

नोट: स्थानों की खोज करते समय, बच्चों की समावेशी जरूरतों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

कक्षा में ज्यामितीय कोणों का अभ्यास
निगम प्रतिभा विद्यालय, नई चौखण्डी, नई दिल्ली

2.5 कक्षा प्रबंधन

कक्षा वह स्थान है जिसका यदि उचित रूप से उपयोग और प्रबंधन किया जाए तो सीखने का एक उर्वर स्थान बन जाता है। प्रभावी कक्षा प्रबंधन के लिए नीचे कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं।

- कला समेकित अधिगम के प्रभावी अनुपालन के लिए कक्षा में बच्चों के बैठने की व्यवस्था और बच्चों और शिक्षक के आने-जाने और गतिविधियों के लिए खुली जगह होनी चाहिए। साथ में यह भी अनुशंसा की जाती है कि गतिविधियों के लिए अधिक स्थान मिल सके। इसके लिए बैठने की परम्परागत प्रणाली (जैसे पंक्तियों और कॉलम) की जगह बच्चों को यू आकार, अर्ध-गोलाकार में बैठाया जाए।
- बच्चों के साथ बातचीत करते समय और गतिविधियों के लिए शिक्षकों/अध्यापकओं को बच्चों तक पहुँचने के लिए कक्षा में जगह होनी चाहिए, इससे शिक्षक को कक्षा में प्रत्येक बच्चे तक पहुँचने में आसानी होगी।
- कला समेकित अधिगम की पद्धति बच्चों के प्रभावी और सामूहिक अधिगम के लिए समूह में काम करने की सिफ़ारिश/अनुशंसा करती है। पूर्व-प्राथमिक स्तर पर समूह का आकार दो का होना चाहिए, कक्षा एक और दो में समूह का आकार दो

से तीन बच्चों का, कक्षा तीन और चार में तीन से पाँच बच्चों का समूह और कक्षा चार और पाँच में चार से पाँच बच्चों का समूह बनाया जा सकता है। उच्च-प्राथमिक चरण तक, बच्चे समूह की बेहतर समझ विकसित कर लेते हैं, इसलिए गतिविधि की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ही शिक्षक बच्चों के समूह की योजना बनायें ना कि संख्या के आधार पर।

- बेहतर परिणाम के लिए बच्चे का समूह बदलते रहें, जिससे बच्चे आपस में एक दूसरे को ज्यादा और बेहतर तरीके से समझ सकें। साथ ही वह एक दूसरे की ताकत और क्षमता से भी परिचित हो सकें और विषय की बेहतर समझ के लिए सहयोगात्मक रूप से सीखें, जिससे उनके सामाजिक-भावनात्मक कौशल में वृद्धि हो।
- सभी प्रकार की विविधता का सम्मान करते हुए समावेश की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना। समूह बनाते समय, कक्षा के बहु-स्तरीय और मल्टी-ग्रेड प्रकृति को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।
- बच्चों द्वारा बार-बार की जाने वाली प्रस्तुतियों को एक संवाद-मूलक (इंटरैक्टिव) शिक्षा वातावरण बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- प्रत्येक कक्षा में प्रदर्शन के लिए एक स्थान सुनिश्चित होना चाहिए जहाँ बच्चों के काम को प्रदर्शित किया जा सके।
- एक रीडिंग कॉर्नर बनाया जा सकता है, जहाँ बच्चों को कहानियों की किताबें, कॉमिक्स, लोककथाएँ, दंत-कथाएँ आदि पढ़ने में आसानी हो।
- कक्षा में एक अभिनव/नवाचार प्रदर्शन करने वाला स्थान/क्षेत्र भी हो सकता है जिसका उपयोग नियमित होने वाली प्रस्तुतियों और प्रदर्शन के लिए किया जा सकता है।

अगर उपरोक्त बताई गई चीजों को सही भावना से किया जाता है, तो यह न केवल बच्चों को उनकी कक्षा और स्कूल के प्रति स्वामित्व की भावना विकसित करने में मदद करेगा बल्कि उन्हें जीवन भर के लिए एक शिक्षार्थी में बदल देगा।

2.6 कला-कार्य (आर्टवर्क) का प्रदर्शन

हर कक्षा में बच्चों के कला संबंधी काम को प्रदर्शित करने का स्थान सुनिश्चित होना चाहिए क्योंकि यह अधिगम में रुचि और उत्सुकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह बच्चों को स्वयं के और दूसरों के कार्यों का विश्लेषण और सराहना करने में भी मदद करता है। बेहतर प्रदर्शन के लिए कुछ सुझाव इस प्रकार हैं:

- सभी बच्चों के मूल (बिना किसी सुधार के) आर्ट वर्क को प्रदर्शित किया जाना चाहिए। प्रदर्शन के लिए कक्षा की दीवार, बरामदे की दीवार आदि का उपयोग किया जा सकता है।
- प्रत्येक बच्चे की निर्माण की प्रक्रिया के लिए सराहना की जानी चाहिए ना की बनाई गयी वस्तु के लिए।
- प्रदर्शन की समय अवधि निश्चित होनी चाहिए अर्थात् प्रदर्शित कला को एक समय अवधि जैसे साप्ताहिक या मासिक रूप से बदलते रहना चाहिए।
- बच्चों के काम के अलावा, प्रदर्शन क्षेत्र में महान कलाकारों के काम को भी प्रदर्शित किया जाना चाहिए, जो बच्चों को एक कला विशेष की बारीकियों को समझने और अपनी खुद की सौंदर्य की समझ को बेहतर करे।

गलियारे की प्रदर्शनी में लीन
निगम प्रतिभा विद्यालय, नई चौखण्डी, नई दिल्ली

विद्यालय की दीवारों का चित्रफलक के रूप में उपयोग
वरिस्स्याकुन्नी उच्च प्राथमिक स्कूल, चोमबाला, वतकारा, कोझीकोड, केरल

3

कला समेकित अधिगम के माध्यम से मूल्यांकन

कला समेकित अधिगम में सामाजिक-भावनात्मक परिणामों और सीखने की सामग्री को बेहतर बनाने के लिए कला के कई रूपों का उपयोग करने की प्रक्रिया है। छात्र विषय सामग्री को समझने और प्रदर्शन करने के लिए दृश्य और प्रदर्शन कला गतिविधियों (परफोरमिंग आर्ट) का उपयोग करते हुए रचनात्मक जांच प्रक्रिया में लगातार सक्रिय होते हैं। यह एक अंतर-शैक्षणिक दृष्टिकोण है, जहां बच्चे को विभिन्न प्रकार के कला अनुभवों में संलग्न रहते हुए मुक्त अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त स्थान और गुंजाइश दी जाती है।

कला समेकित अधिगम शिक्षण-शास्त्र का एक तरीका है, जहां कला का उपयोग अनुभवात्मक अधिगम के साधन के रूप में किया जाता है जिसमें विद्यार्थी अवलोकन, कल्पना, अन्वेषण, प्रयोग, सृजन और ज्ञान के अनुप्रयोग के विभिन्न चरणों से गुजरता है।

कला समेकित शिक्षा, मूल्यांकन करने में पारंपरिक पेपर-पेंसिल या मौखिक और याद करके सुनाने वाली पद्धति से परे एक सतत् और समग्र मूल्यांकन प्रणाली के जरिये विद्यार्थी के विषय संबंधी समझ के साथ-साथ सामाजिक-भावनात्मक विकास को समझने में भी मदद करती है। इसलिए यह दक्षता-आधारित शिक्षा और क्षमता-आधारित शिक्षा का आंकलन करने के लिए एक प्रभावी उपकरण बन जाता है।

3.1 कला समेकित अधिगम-आधारित मूल्यांकन करने के लिए, अध्यापक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

- **पूर्व धारणा से मुक्त (नॉन जजमेंटल):** अध्यापक को अपने पूर्वाग्रहों को प्रतिबिंबित नहीं करना चाहिए या विद्यार्थियों से बातचीत के दौरान उसकी ऐसी धारणा दिखाई भी नहीं देनी चाहिए।
- **तुलना रहित:** अध्यापक को छात्रों का आंकलन योग्यता के आधार पर करना चाहिए और उनकी एक दूसरे से तुलना नहीं करनी चाहिए।
- **गैर–प्रतियोगी:** कला समेकित अधिगम आधारित मूल्यांकन एक आनंदमई गतिविधि होनी चाहिए, जहां हर बच्चे को एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा किए बिना भाग लेने और उसे स्वीकार करने का समान अवसर मिलता है।
- इसे व्यक्तिगत अधिगम की प्रणाली को पूरा करना चाहिए और विद्यार्थी की गति क्रम (पेस) का सम्मान करना चाहिए। कला समावेशी अधिगम में आकलन एक निरंतर चलने वाली (ऑन-गोइंग) प्रक्रिया है जो सीखने के स्पष्ट पहचान के परिणामों के साथ शुरू होती है और शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया में कई बिंदुओं पर हो सकती है।
- **भय-मुक्त:** कला समावेशी अधिगम पर आधारित मूल्यांकन एक भय-मुक्त गतिविधि है, जहां बच्चे बिना किसी भय के, असफलता के डर से और उनके बारे में क्या सोचा जा रहा है इस भावना से मुक्त हो कर अपना प्रदर्शन करते हैं। कला समेकित अधिगम आधारित मूल्यांकन में अध्यापक मूल्यांकन के विभिन्न पद्धतियों और तकनीकों का प्रयोग कर सकते हैं।

- कला समेकित अधिगम आधारित मूल्यांकन एक अनोखा मंच है, जहाँ व्यक्तिगत और समूह प्रदर्शन दोनों का आंकलन योग्यता-आधारित शिक्षण परिणामों के लिए किया जा सकता है।
- अध्यापक विद्यार्थी के मौखिक और गैर-मौखिक दोनों भावों का आकलन कर सकते हैं। मौखिक अभिव्यक्ति मुख्य रूप से मौखिक संचार का एक तरीका है जैसे भाषण, प्रस्तुति और घोषणाओं के साथ-साथ दोस्तों के बीच बातचीत आदि। गैर-मौखिक अभिव्यक्तियाँ दृश्य संकेत हैं, जिनमें हाव-भाव, चेहरे के भाव, शरीर की लयात्मक गति, स्पर्श और बिना बोले संवाद करने का कोई अन्य तरीका शामिल है।
- कला समेकित अधिगम में मूल्यांकन सुविधाकर्ता को छात्र के सामाजिक-भावनात्मक और जीवन कौशल विकास का आकलन करने की अनुमति देता है। ये कौशल, रचनात्मक-सोच, आलोचनात्मक सोच, सहानुभूति, तनाव का सामना करना, भावनाओं पर नियंत्रण, अंतर-व्यक्ति संबंध, प्रभावी संचार कौशल, निर्णय लेने का कौशल, आत्म-जागरूकता और समस्या-समाधान हैं।
- अध्यापक इसके माध्यम से मल्टी ग्रेड व्यवस्था वाले (जहां एक ही शिक्षक विभिन्न आयु वर्ग के विद्यार्थियों के साथ काम करता है) जो हमारे बहुत से स्कूलों में प्रचलित है, में भी मूल्यांकन कर सकता है।

गतिविधि के रूप में कठपुतली का खेल डेमोन्सट्रेशन मल्टीपरपज स्कूल, आर. आई. ई., भोपाल,मध्य प्रदेश

- अध्यापक को विद्यार्थियों को सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक संदर्भों, लिंग संबंधी चिंताओं और विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को ध्यान में रखते हुए समावेशी और निष्पक्ष अभ्यास करने का अवसर देना चाहिए।

3.2 कला समेकित अधिगम आधारित मूल्यांकन के लिए तकनीक

कला समेकित अधिगम में मूल्यांकन छात्रों के कार्य-आधारित प्रदर्शन को बढ़ावा एवं उनकी योग्यता आधारित अधिगम का आकलन में सहायता करता है। सुझाए गई प्रणालियाँ और तकनीक:-

- विद्यार्थियों के बनाए जाने वाले चित्र, कला और पेंटिंग
- कला गतिविधियाँ जिनमें काटना, चिपकाना, अंगूठे की छपाई, पत्ती की रगड़, चाल और ताल आदि शामिल हो सकते हैं।
- रोल-प्ले/नाट्य-रूपान्तरण और नाटक, कठपुतली का खेल
- कार्यपत्र/वर्कशीट
- क्षेत्र के दौरे, भ्रमण के दौरान अवलोकन
- तैयार कलाकृति के नमूने के साथ पोर्टफोलियो; अधूरी कलाकृति को भी रिकॉर्ड किया जा सकता है और उसका मूल्यांकन किया जा सकता है।
- बच्चे के संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक और रचनात्मक विकास की समग्र प्रगति की वर्णनात्मक और वास्तविक रिपोर्टिंग की जानी चाहिए और उसे संजोकर रखा जाना चाहिए।
- अध्यापक, छात्रों के विषय-विशिष्ट के अधिगम की प्रगति, कला के विभिन्न रूपों, विशिष्टता और चुनौतियों के रिकॉर्ड को व्यवस्थित करने के लिए व्यक्तिगत नोट्स रख सकते हैं। विशेष प्रतिभा (प्रकृति प्रदत्त क्षमताएं) को भी पहचाना और पोषित किया जा सकता है।
- कक्षाओं और बरामदों में विषय-आधारित आवधिक प्रदर्शन
- छात्रों के द्वारा समूह में किये गये परियोजना कार्य (प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं)
- किसी विषय पर आधारित कहानी, कविता, पत्र, पोस्टर और कहानी-चित्र
- बच्चों की प्रस्तुतियाँ और प्रदर्शन।

पोर्टफोलियो का बच्चों द्वारा प्रबन्धन
निगम प्रतिभा विद्यालय, नई चौखण्डी, नई दिल्ली

यह सूची केवल सुझाव के लिए है और अध्यापक स्वयं रचना कर तंत्र/तरीके उपयोग सकता है

***प्राथमिक चरण के लिए सीसीई परीक्षा पैकेज के लिए क्यूआर कोड**

यह सूची अध्यापक को छात्रों के काम का आकलन करने में, अधिक व्यवस्थित होने के लिए भी मार्गदर्शन करेगी और अध्यापक को अपने छात्रों की समझ और ज्ञान को बढ़ा कर साझा सीखने की दिशा में उनकी नींव रखेगी।

3.3 मूल्यांकन के लिए करने /ना करने के लिए बातें:

क्या करें

- हर विद्यार्थी की प्रशंसा करें और उसके प्रयासों को पहचानें।
- प्रक्रिया का आकलन करें, उत्पाद का नहीं।
- रचनात्मक प्रतिक्रिया दें।
- गुणात्मक और उत्साहजनक टिप्पणी करें।
- विशेष आवश्यकता वाले सभी छात्रों को समान अवसर दें।
- सीखने वाले की गति का सम्मान करें और योजना बना कर की जा रही गतिविधि के समय को लेकर लचीला रहें, जो छात्र अभी भी कार्य समाप्ति की ओर हैं, उन्हें अवसर प्रदान करें।

- खुले-उत्तर (ओपन एंडेड) वाले प्रश्न पूछें जो उन्हें लिखने/बात करने/ड्राइंग/योजना बनाने की जगह दे सके।
- हर बच्चे के मूल, आर्ट वर्क (बिना सुधारे हुए को) प्रदर्शित करें (भले ही काम अधूरा हो)।
- शिक्षक-शिक्षण प्रक्रिया के दौरान कक्षा में प्रदर्शित चीजों का संदर्भ की तरह प्रयोग करें
- विद्यार्थी के पूर्व कार्य से ही उसकी प्रगति की तुलना करें।

क्या ना करें

- कलात्मकता की गुणवत्ता पर टिप्पणी न करें।
- छात्रों की कलाकृति की एक-दूसरे से तुलना न करें।
- पूर्व निर्धारित धारणाओं के साथ कक्षा में ना जाएँ।

जीवित कक्षा
निगम प्रतिभा विद्यालय, नई चौखण्डी, नई दिल्ली

4

भूमिका और ज़िम्मेदारी

ये दिशा-निर्देश हितधारकों को कला समवेशी शिक्षा की प्रक्रिया और उसके कार्यान्वयन की समझ विकसित करने के लिए लिखे गए हैं। यह खंड कला समावेशी अधिगम के सरल और सुगम संचालन के लिए विभिन्न हितधारकों की भूमिका और जवाबदारी को सुनिश्चित करने के लिए लिखा गया है। विभिन्न हितधारकों के लिए निम्नलिखित सुझाव हैं:-

4.1 प्रधान अध्यापक की भूमिका और जवाबदारी (एचओएस)

इस शिक्षाशास्त्र/शिक्षण प्रणाली के कार्यान्वयन में स्कूल के प्रमुख की महत्वपूर्ण भूमिका है। स्कूल के प्रधानाचार्य कला समेकित अधिगम के राष्ट्रीय, राज्य और जिला नीति उनके स्कूलों में कैसे लागू की जा सकती है, को आकार देते हैं। वह योजना का नेतृत्व करेगा, कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करेगा और क्रियान्वयन और संचालन में अपनी टीम का फॉलो-अप करेगा। प्रधानाध्यापक के लिए आवश्यक है कि वह:-

- एक स्पष्ट दृष्टिकोण रखें और वार्षिक लक्ष्य विकसित करें और अपने स्कूलों में कला समेकित अधिगम के कार्यान्वयन के लिए योजना बनाए।
- शिक्षकों और माता-पिता को इस अवधारणा के बारे में उनकी तत्परता और स्पष्टता के लिए तैयार या अनुकूल रखे।
- शिक्षकों के साथ लचीला रहें और उन्हें कला समेकित अधिगम के क्षमता विकास में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करे।
- उनके स्कूलों में कला समेकित अधिगम कक्षाओं की सर्वोत्तम अभ्यासों को स्वीकार करें और उनकी सराहना करे।
- दो काल खंडों को मिलाने और टीम शिक्षण के लिए लचीली समय-सारणी को प्रोत्साहित करे।
- वार्षिक स्कूल कैलेंडर बनाने की प्रक्रिया का नेतृत्व करे जिसका कला समेकित शिक्षा की शिक्षण शास्त्र में रचनात्मक रूप से उपयोग किया जा सके।
- शिक्षकों के बेहतर फॉलो-अप और सहायता (हैंड- होल्डिंग) के लिए मासिक बैठकें आयोजित करे।
- छात्रों और शिक्षकों की मदद से सामुदायिक संसाधनों को पता लगाना और उसे जुटाना।

4.2 शिक्षक की भूमिका और जवाबदारी:

एक सफल कला समेकित अधिगम कक्षा, विषय शिक्षण के साथ कला को एकीकृत करने के शिक्षक के प्रयासों पर अत्यधिक निर्भर है। कला समेकित अधिगम कक्षा में, एक शिक्षक से एक संरक्षक, मार्गदर्शक और सहजकर्ता की भूमिका निभाने की अपेक्षा की जाती है, जो सीखने की क्षमता को प्रकट करता है। शिक्षक को:

शिक्षक एवं छात्र उत्सव की तैयारी करते हुए
निगम प्रतिभा विद्यालय, नाँगलोई सैदान, नई दिल्ली

- उसकी कक्षा के लिए एक स्पष्ट दृष्टि और लक्ष्य रखें जो स्कूल, राज्य और राष्ट्र के साथ एकीकृत हो।
- इसे लागू करने के लिए प्रधान अध्यापक के साथ लचीला और सहयोग करें।
- टीम के साथ-साथ व्यक्तिगत रूप से कला समेकित अधिगम की गतिविधियों को डिज़ाइन करें।
- निरंतर व्यवसायिक विकास के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में भाग लेना।
- टीम-शिक्षण के लिए कालखण्डों को जोड़ने के लिए समय-सारणी का पालन करना।
- त्योहारों, सभाओं, बाल सभा और विशेष दिनों के लिए वार्षिक स्कूल कैलेंडर का पालन करें जिससे कला समेकित अधिगम में शिक्षाशास्त्र के लिए उसका रचनात्मक रूप से उपयोग किया जा सकता है जैसे बालसभा का उपयोग सामाजिक विज्ञान में चुनाव प्रक्रिया समझाने के लिए किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों की सहायता से सामुदायिक संसाधनों को चिह्नित करने और जुटाने में भाग लें।

शिक्षक की भागीदारी से बढ़ता आनन्द
विट्ठलपारा प्राथमिक स्कूल, ता. लखतर, जिला सुरेन्द्रनगर, गुजरात

4.3 कला समेकित शिक्षा में कला शिक्षक की भूमिका

कला समेकित अधिगम में कला शिक्षक की भूमिका एक सहजकर्ता की है। कला शिक्षक को कला समेकित अधिगम की समझ शिक्षण शास्त्र के रूप में होना चाहिए। उनमें "कला को एक विषय के रूप में" कला को विभिन्न विषयों के शिक्षण-अधिगम के साधन में अंतर करने की समझ होनी चाहिए।

- कला शिक्षकों को अपने विषय को पढ़ाने के अलावा विभिन्न विषयों की कला समेकित अधिगम की गतिविधियों की योजना में भी भाग लेना चाहिए।
- उन्हें सहजता और प्रसन्नता से टीम शिक्षण का हिस्सा होना चाहिए।

नये स्थानों और नई सामग्री से शिक्षा का आनन्द कई गुना बढ़ जाता है
बालिका माध्यमिक विद्यालय, वनिहामा, गुलाब बाग, श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर

5

कला समेकित अधिगम – नमूना

गतिविधि: 5.1

प्राथमिक अनुभाग	हिन्दी
कक्षा	1
भाषा शिक्षण के उदेश्य	बच्चों का मौखिक भाषा विकास
पाठ का नाम	पकौड़ी (रिमझिम-1)
प्रयोग में लाई गई कला	दृश्य एवं रोल प्ले (प्रदर्शन) कला

3 घंटे

कला आधारित गतिविधि के लिए आवश्यक सामग्री

चार्ट पेपर, कैंची, गोंद, रंग, क्रयोन्स, गूँथी हुई मिट्टी, ब्रश आदि। (बच्चों को सामग्री साझा कर उपयोग के लिए प्रोत्साहित करें। स्थानीय सामग्री की खोज और उनके उपयोग के प्रति बच्चों को प्रेरित और संवेदनशील करने की जरूरत है।)

अधिगम प्रतिफल

विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/ और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे जानकारी पाने के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना, अपना तर्क देना आदि।

प्रथम चरण

कक्षा की शुरुआत बच्चों के हालचाल एवं एक मनोरंजक गतिविधि के साथ आनंददायी माहौल में की जाएगी। बच्चे एक गोल घेरे में खड़े होंगे। हाव-भाव के साथ ताली बजाते हुए पहले एक गीत गाएँगे- 'खाएँगे जी खाएँगे, खूब जलेबी खाएँगे।' दो तीन बार इस पंक्ति को दुहराने के बाद गीत को गोले में एक–एक बच्चे से होते हुए आगे बढ़ाएँगे। सभी बच्चे स-स्वर और हाव-भाव के साथ गाएँगे, जिस बच्चे की बारी होगी वह अपनी पसंद की मिठाई, फल, सब्जी आदि का नाम लेकर गीत को पूरा करेगा, जैसे किसी को केले पसंद हैं, किसी को खरबूजे पसंद हैं तो वह अपनी बारी आने पर बोलेगा खूब केले खाएँगे या खूब खरबूजे खाएँगे। गोले में गीत का एक चक्र पूरा होते ही एक दूसरे के उत्साहवर्द्धन के लिए ताली बजाते हुए गतिविधि समाप्त होगी।

कक्षा में स्थान प्रबंधन को ध्यान में रखते हुए बच्चों को बैठाएँ। हालाँकि, बच्चे गोले, आयत या वर्ग के आकार की किसी ज्यामितीय या किसी अन्य रोचक आकृति में बैठें तो आपस में बातचीत आसान होगी। अब बच्चों से उनके पसंद के भोज्य पदार्थ पर बातचीत होगी। बातचीत में भाषा का कोई बंधन नहीं होगा। बच्चे जिस भाषा में सहज महसूस करें उसमें बातचीत की जाएगी। जिन बच्चों को पकवान, मिठाई, नमकीन, कोई पेय पदार्थ आदि पसंद है तो उनसे यह जानने की कोशिश होगी वह क्यों पसंद है, कैसे बनता है, उसमें कौन-कौन सी चीज़ें पड़ती हैं आदि। एक ही पकवान अलग-अलग बच्चों के घर अलग-अलग तरीके से बनता होगा, बच्चों से बातचीत में इसे भी शामिल करने की जरूरत है। जिन मिठाइयों या पकवानों के बारे में बच्चे नहीं जानते हैं, उसके बारे में अपने साथी से सवाल करें, शिक्षक बीच-बीच में इसके लिए बच्चों को प्रेरित करते रहें। इससे अधिकतम बच्चे अपना अनुभव साझा कर पाएंगे और सुन पाएंगे। । सभी बच्चों को बातचीत में शामिल करना अनिवार्य होगा। कुछ बच्चे शर्मीले या कुछ कम बोलने वाले स्वभाव के होते हैं, उन्हें विशेष प्रोत्साहन देते हुए बातचीत में शामिल किया जाएगा।

वस्तुतः यह गतिविधि बच्चों के मौखिक भाषा विकास को ध्यान में रखकर की जाएगी। यह गतिविधि बच्चों के अंदर की झिझक को तोड़ते हुए उनमें आत्मविश्वास को बढ़ाएगी। इसका असर बच्चों की सहभागिता को लेकर, शिक्षक से बातचीत या आपस में बातचीत पर सकरात्मक रूप से पड़ता है। इसतरह की गतिविधियों से बच्चों की रुचि/अरुचि की जानकारी भी होती है, जो सीखने की योजनाओं के निर्माण में सहायक होती है।

दूसरा चरण

पहले चरण में बच्चों से की गई बातचीत को ताजा करते हुए 'पकौड़ी' कविता की चर्चा बच्चों से की जाएगी। फिर कविता का स-स्वर एकल गायन सहित जोड़े, बड़े समूह, छोटे समूह आदि में किया जाएगा। जोड़े में एक बच्चा एक पंक्ति और दूसरा बच्चा दूसरी पंक्ति हाव-भाव के साथ गाएगा। इसी तरह छोटे समूह में एक समूह आधी कविता को गाएगा तो दूसरा समूह आधी कविता को गाएगा। इसके अतिरिक्त शिक्षक परिस्थितियों को देखते हुए अपने विवेक से रोचक बदलाव कर सकते हैं।

तीसरा चरण

ताली या किसी वाद्ययंत्र की थाप के साथ बच्चे गोल घेरे में घूमेंगे। रुकने के निर्देश के साथ बच्चे रुक जाएंगे। तेज बोलने पर तेजी से चलेंगे। और तेज कहने पर कुछ और तेजी से चलेंगे जबकि खूब तेज कहने पर और ज्यादा तेज चलेंगे।

रुकने के निर्देश के साथ बच्चे रुक जाएंगे। इसके बाद 'पकौड़ी' कविता का गायन बच्चों

द्वारा शुरू किया जाएगा। बीच-बीच में शिक्षक भी अपना स्वर देंगे ताकि गायन की गति बनी रहे। और तेज के साथ बच्चे थोड़ी ऊँची आवाज़ में गाना शुरू करेंगे। कुछ और तेज बोलने पर और तेज आवाज में गाएँगे। इसी तरह खुशी या दुखी होने पर, गाने की गति तेज और धीमी आदि होने पर गाने की गतिविधि में कविता के गायन का आनंद बच्चे लेंगे।

चौथा चरण

यह सत्र बच्चों की प्रिय कला गतिविधि 'मिट्टी से कलाकृति निर्माण' (क्ले मोडेलिंग) को समर्पित है। बच्चों के चार समूह बनाए जाएंगे। चारों समूह के कार्य कुछ इस प्रकार बंटे होंगे-

समूह 1- मिट्टी द्वारा सब्जियों की कलाकृति का निर्माण।

समूह 2- पकवानों की कलाकृति का निर्माण।

समूह 3- मिठाइयों की कलाकृति का निर्माण।

समूह 4- खाना खाने वाले पात्रों की कलाकृति का निर्माण।

हर उम्र के बच्चे मिट्टी से खेलना पसंद करते हैं। इसके लिए चिकनी मिट्टी विद्यालय में तैयार की जा सकती है या समुदाय के कुम्हारों से प्राप्त की जा सकती है। अगर विद्यालय में मिट्टी तैयार करना हो तो कृपया सुनिश्चित कर लें कि इसमें कंकड़ या कोई अन्य अवांछित सामग्री आदि न हों। इसे गूँथे आटे की तरह होना चाहिए।

पाँचवाँ चरण

चारों समूह अपनी-अपनी कलाकृतियों का प्रदर्शन समूहवार करेंगे। सभी समूह बारी-बारी से अपनी कलाकृति के निर्माण, उपयोग, गुण आदि के बारे में बताएँगे। दूसरे समूह के बच्चों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के जवाब देंगे। अंत में बच्चों की प्रस्तुति की सराहना एवं ताली की गड़गड़ाहट के साथ सत्र का समापन होगा।

आंकलन

पूरी शिक्षण प्रक्रिया में आंकलन सतत होता रहा। बोलने के क्रम में बच्चों के शब्द भंडार, शब्दों का चयन, अपनी बातों को परोसने का तरीका, जानकारी के लिए प्रश्न पूछते समय उनकी समझ आदि आंकलित होते रहे। बच्चों द्वारा सृजित कलाकृतियाँ उनके कल्पना, अनुमान, अनुपात, सृजन आदि की समझ, उपयोग और प्रस्तुति के क्रम में संवाद आदि आंकलन के बिन्दु हैं। पूरी शिक्षण प्रक्रिया में अवलोकन के अतिरिक्त चेकलिस्ट, पोर्टफोलियो आदि आंकलन के बेहतर तरीके होंगे।

अन्य विषयों से जुड़ाव- कक्षा एक में भाषा और पर्यावरण अध्ययन अवधारणा और विषय-वस्तु के स्तर पर बिलकुल करीब हैं, अतः जुड़ाव भी स्वाभाविक है।

ACTIVITY 5.2

Subject	**English**
Standard	**3**
Lesson	**Marigold Book 3 Unit II: Nina and the baby sparrows**
Form of the art activity	**Visual and Performing**

TARGET LEARNING OUTCOMES

- Expresses orally her/his opinion/understanding about the story and characters in the story in English as well as in mother tongue.
- Uses meaningful short sentences in English orally and in writing a variety of nouns, pronouns, adjectives and prepositions in context compared to the previous class.

TARGET LIFE SKILLS

- Develops empathy and sensitivity towards immediate environment.
- Develops listening skills.

MATERIAL REQUIRED:

- Paper, pencil, colouring material
- Space for moving around

Day 1

Step 1: Ice-breaker

Teacher asks the students to form two concentric circles [a smaller circle within a big one facing each other] .They are encouraged to make the circles in the least time possible. They are told that they will start moving as soon as they hear the teacher give a cue. [The cue can be a clap, whistle or a loud command]

Procedure: The children standing in two circles will move in opposite directions. They stop the moment at the cue. The children facing each other from the two cicles will make pair and can share an activity which they like most. They can share stories about places where they have been to or would like to visit with each other.

The game could continoue for three-four rounds. Ensure that each child gets a chance to share his /her thoughts [If the children speak in their home language/mother tongue it should not be discouraged]. After the activity, the whole class including the teacher, may sit together and each child may share the favourite activities of any one friend they interacted with. Students can draw and colour them on a sheet of paper. After everyone has completed, their drawings are displayed on the display board. Children move around and try to find the drawing which matches with what their activity was [Two or more children may have the same activity and they should be allowed to pick up any one of drawings matching their descriptions].

Suggested Leading questions to connect with the chapter

1. How do you feel when you visit places you like?
2. If for some reason your visit is cancelled how do you feel?

Step 2: 'My dear Nina'

The teacher announces that a little girl called 'Nina' has also come

to talk to them and tell them why she did not go for a family function. The teacher fetches out a little stick puppet/transforms herself/modulates her voice to sound like a girl called 'Nina' (If a teacher is not able to create puppets or sound like the make-believe girl called Nina, the teacher could say in a story telling mode about a little girl called Nina who is sad).

Nina greets the children and asks them whether they can guess why she did not go out with her parents. Many replies come in as the puppet interacts with various children and they are all acknowledged. The class ends for the day.

Day 2

Step 3: 'Nina and the baby sparrows'

The teacher reminds the children about Nina, the little girl who came to their class the day before. She tells them that to find out Nina's reason for not going out they will read the story 'Nina and the baby sparrows'. The teacher can encourage children to read the story on their own first. After that the chapter will be read in a flow by the teacher using the correct pronunciations and expressions. After reading the story the group can brainstorm on the following questions asked by the teacher:

- How do you like Nina?
- What qualities do you think Nina had?
- Has anyone in the class shown such kindness to any animal or person?
- If so, when and how?
- What other qualities in a person which can make her/him a good human being?

Teacher can note down all the qualities told by children on the black board and maybe add the missing ones.

Step 4: 'Meet my friend'

The teacher then asks children to sit in a circle and paint a face on their thumb. Every child can name their face. They have to introduce the painted character, with a quality present in the person. The teacher is also a part of the group and begins the activity. She can begin by saying "Hello friends, my dear friend Savitri is an honest girl. She never cheats on any one" Another child could say: "Hello friends, my dear friend Raja is a punctual boy. He gives medicine to his grandfather at proper timings" This process will go on till every child gets a chance to speak. This can be used as an opportunity for assessment.

- Teacher can assess children's ability to think of adjectives and to link them appropriately to the situation.
- If any student repeats an adjective, allow it. The children should be encouraged to think and relate it to different situations.

Step 5: Pictorial sequence

The teacher can asks children to sit in groups and paint pictorial sequence of the story. Ask them to write few lines in their own words describing each scene: this description can be used by the teacher as an assessment to see whether the children have understood the story and got the sequence in the correct order. The group work could be displayed in the classroom.

- As an extension activity, children could be told to work in groups to add more scenes to take the story further
- The teacher could take this opportunity to let children talk about the other animals and their babies. Drawings could be made too

Extension activity

- The children can be asked to make a bird-bath and a feeding

corner for the birds from waste material

- They can leave bread crumbs, grains for the feathered birds
- They can be encouraged to leave a bowl of water in a quiet corner of the school. The responsibility of looking after the bowl can be taken up turn wise

Integration with the other subjects: Teacher can link it to EVS by asking the following lead questions;

- How are birds different to human beings?
- Why are there fewer sparrows in the cities?
  Looking around, Class 3, Theme -Animals/Birds
- Chapter - Making pots
- Chapter 19 - Our friends, Animals

Assessment tools suggested

- Portfolio
- Customised performance indicator for group activities
- Self and peer assessment

गतिविधि 5.3

प्राथमिक सेक्शन	गणित
कक्षा	4
कवर किये जाने वाले विषय	आधा और एक चौथाई

2 घंटे

1) किसी ईकाई के बराबर हिस्से (गोल/चौकोर/आयताकार)

2) वस्तुओं के बराबर भाग का अभिप्राय

3) एक पूरे के आधे, एक चौथाई और तीन चौथाई की पहचान करना

4) प्रतीक चिन्ह ½ ¼ ¾ की पहचान करना

5) भागों का जानकारी बनाम पूरे ½ ¼ ¾ के रूप में

6) ½ ¼ ¾ चिन्हों की पहचान

इस विषय को कक्षा 4 और 5 में बच्चों के साथ किया जाना है। आम तौर पर यह देखा गया है कि बच्चों को अंश/भाग और एक कठिन विषय लगता है। उन्हें ऐसी कई अवधारणाएँ कठिन लगती हैं। यह ना केवल बच्चों को कठिन लगता है, कभी-कभी शिक्षक भी भिन्न-भिन्न अमूर्त अवधारणाओं को समझाने में कठिनाइयों का सामना करते हैं। ऐसी गलत अवधारणायें जैसे- ½ और 1/3 के बीच, 1/3 बड़ा होना चाहिए क्योंकि 3 संख्या 2 संख्या की तुलना में एक बड़ी संख्या है ½+½=2/4; क्यों और कैसे होता है और ½= 2/4 कैसे होगा आदि यह सामान्यतः होने वाली कठिनाइयाँ हैं। ये गलतफहमी बच्चों के दिमाग में तब पैदा होती है जब 'भाग और पूरे' के विषय को यांत्रिक रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

यदि बच्चे भिन्नात्मक संख्याओं को एक सम्पूर्ण आकार के हिस्सों के रूप में देख सकते हैं, यदि वे अपने अनुभव के आधार पर किसी भिन्नात्मक संख्या की कल्पना कर सकते हैं और उसे उसकी अमूर्त धारणा के साथ जोड़ सकते हैं तब गणित के प्रति उनका डर, विषय की समझ और उसके लिए रुचि में बदल जाएगा।

इस विषय को कला के साथ समेकित करके बच्चों की इससे जुड़ हुई अवधारणाओं के लिए स्पष्टता विकसित करने में मदद कर सकता है। बच्चों को कला बहुत पसंद है, और यदि शिक्षण का तरीका कला-आधारित है तो बिना किसी बोझ के अमूर्त अवधारणाओं को समझना दिलचस्प और आसान हो जाता है।

भागों और पूरे को दो तरह से समझाया जाता है- क्षेत्रवार (क्षेत्र मॉडल) और सेट वार (सेट मॉडल)।

- **क्षेत्र मॉडल-** आकार के क्षेत्रों के अंश/भाग (वर्ग, आयत, वृत्त और अन्य आकार) कला की गतिविधियां जैसे पेपर क्राफ्ट, ड्राइंग-पेंटिंग जैसी कलाकृतियां, आधार और क्षेत्र में पूरा और उसके हिस्सों/भागों की कल्पना करके बच्चे की समझ बढ़ाने में मदद करते हैं।
- **सेट मॉडेल-** वस्तुओं के संग्रह का अंश/भाग (सेट) जैसे किसी दुकान से सब्जी खरीदना (किसी विशेष प्रकार की सब्जी खरीदी जाती है) आदि। दृश्य और प्रदर्शन कला की गतिविधियाँ और आइसब्रेकर, भाग और पूरे को देखने, देखने और अनुभव करने के लिए कई ऐसी स्थितियाँ और गुंजाइश प्रदान करती हैं।

क्षेत्र और सेट दोनों मॉडल में भाग और सम्पूर्ण जैसी अवधारणाओं को समझने के लिए बहुत से उदाहरणों की आवश्यकता होती है ताकि इसमें अंतर्निहित अवधारणाओं के प्रयोग से उसे ठीक से समझा जा सके।

कला गतिविधि का रूप: दृश्य और प्रदर्शन कला इन स्थितियों को जीवंत रूप से प्रस्तुत करने में मदद करती हैं ताकि अधिगम स्वाभाविक रूप से एक आनंदमई वातावरण में हो।

अधिगम प्रतिफल

- दिए गए चित्र में, पेपर फोल्डिंग में और वस्तुओं के संग्रह में एक पूरे के आधे, एक चौथाई, तीन-चौथाई की पहचान करता है।
- संख्याओं/अंकों का उपयोग करके अंशों को आधा, एक-चौथाई और तीन-चौथाई के रूप में दर्शाता है।
- अन्य भिन्न के साथ एक भिन्न की समतुल्यता को दर्शाता है।

आवश्यक सामग्री:

- पुराने अखबार, पत्रिकाएँ/कैलेंडर/रद्दी पेपर आदि
- कैंची
- गोंद (विशेषतः स्थानीय रूप से उपलब्ध)

(विद्यार्थियों को सामग्री गतिविधि के कम से कम एक दिन पहले लाने के लिए कहें)

प्रथम चरण- गोल का संसार

अध्यापक, विद्यार्थियों को एक चित्र दिखायें (जिसमें केवल गोल से जुड़े हुए चित्र हों) और विद्यार्थियों को उसे देख कर बताने के लिए कहे;

- आपको क्या दिखाई पड़ रहा है? चित्र में आपको कौन सी चीज ज्यादा आकर्षित कर रही है?
- क्या आपको दिखाये गए चित्रों मे कोई ऐसी चीज दिखाई दे रही है जो सभी में समान है?
- यह चित्र कैसे बनाए गए होंगे इस बारे में आप क्या सोचते हैं? क्या आप इन चित्रों में से कुछ बनाना चाहेंगे?

विद्यार्थियों की टिप्पणियों को बिना यह बताए कि वह गलत हैं कि सही, अध्यापक उनका खुले मन से स्वागत करें।

यह महत्वपूर्ण है की विध्यार्थी कक्षा मे स्वतन्त्रता पूर्वक अपनी बात कहें और टिप्पणिया दें। बच्चों को सुनना और सभी टिप्पणियों का स्वागत करते हुए साझा करना उन्हें प्रेरित करता है और उन्हें निडरता से व्यक्त करने देता है (डर और अध्यापक द्वारा कोई पूर्व छवि बनने का भय आदि) वैसे तो इस तरह की स्वतंत्र अभिव्यक्ति में गतिविधियों के अच्छे और सही होने के संकेत देते हुए, शिक्षक सही/गलत जैसी एक निश्चित अवलोकन की प्रतिक्रिया दे सकता है, पर अगर इनसे बचा जाए तो इससे कक्षा में एक स्वस्थ वातावरण बनाता है जो बच्चों को स्वतंत्र और ईमानदार अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

अब अध्यापक विद्यार्थियों से एक ऐसी काल्पनिक स्थिति के बारे में बात करे जहां हर चीज गोलाकार है। अध्यापक (चार्ट से बनी हुई 4 गोलाकार आकृतियाँ) दिखा सकती है और बता सकती है की यह एक गोलाकार संसार है और केवल गोल चीजें ही इसका हिस्सा हो सकती हैं, तो इसमें और कौन-कौन सी चीजें जोड़ी जा सकती हैं?

इन चीजों को बनाने के लिए विद्यार्थियों को उनकी लाई सामग्री का उपयोग करने को कहें (अखबार/कैलेंडर) आदि विद्यार्थी दिखाये गए चित्रों को देख कर अपनी पसंद के चित्रों को दोबारा बनाने के लिए प्रेरित होंगे। कोई भी अपनी पसंद के जितने चाहे चित्र बना सकता है। इस तरह की आकृतियों को बनाने के लिए एक बच्चा गोल आकृति को आधे में मोड़ देता है, इसे फिर से मोड़ता है (इसे आधे का आधा बनाता है) और एक निश्चित आकृति बनाने के लिए टुकड़ों का उपयोग करता है। इन टुकड़ों का उपयोग विभिन्न रचनात्मक तरीकों और अभिविन्यासों में किया जाता है जो बच्चों को एक गोलाकार के इन हिस्सों का उपयोग करने

का समृद्ध अनुभव प्रदान करता है। यह न केवल उनकी रचनात्मकता, कल्पना और सौंदर्य बोध को बढ़ाता है, बल्कि एक चक्र के हिस्सों के दृश्य को स्पष्टता और मजबूती प्रदान करता है (इस कला-अनुभव के बाद उन्हें आधा या 'आधा का आधा' समझने में सहायता मिलेगी)

अब सभी बच्चों को चार समूहों में बाँट दें और उन्हें प्रदर्शन बोर्ड पर कुछ रचनात्मक बना कर अपना एक गोलाकार संसार बनाने के लिए कहें। बच्चों द्वारा व्यक्तिगत या समूह में किए गए काम की प्रशंसा करें। यदि कोई बच्चा किसी कारण से अपना काम पूरा नहीं कर पाए तो उसे अपने दूसरे साथियों का काम देख कर उसे पूरा करने के लिए प्रेरित करें। बच्चों के काम के बारे में चर्चा उनका आत्मविश्वास बढ़ाती है कि उनका काम भी महत्वपूर्ण है और पूरी रचनात्मकता में उसकी भी कोई भूमिका है।

द्वितीय चरण– गृह कार्य

बच्चों को आयताकार संसार को समझने का गृह-कार्य दिया जा सकता है कि इसकी क्या विशेषताएँ होंगी? वे आयत/वर्ग और इसके आधे और आधे हिस्से का उपयोग करके आकृति बनाने की कोशिश कर सकते हैं।

बच्चों को तरह -तरह के क्षेत्र की आकृतियों के बारे मे जानकारी होनी चाहिए जैसे पूरी आकृति या उसका कोई हिस्सा जैसे वर्ग, आयत, वृत्त और कई अन्य आकृतियां। इसकी आवश्यकता बच्चे को उसके दैनिक जीवन में पड़ती है। इन आकृतियों के साथ पेपर क्राफ्ट गतिविधियों के दौरान यह आकृतियाँ बच्चे को देख कर समझने में मदद करती हैं जैसे एक वृत का ½ आधा/ 1/3 तिहाई/ ¼ चौथाई या त्रिभुज या तिकोना कैसा दिखता है और जब इन दोनों को विभिन्न झुकाव पर कैसे जोड़ा जा सकता है और ये हिस्से कैसे कोलाज देते हैं।

गतिविधि 5.4

Upper Primary Section	English
Class	6
Lesson	The kite
Form of the Activity	Theatre, Visual arts

3 Hrs.

Target Learning Outcomes

- Responds to different kind of instructions, requests and directions in varied contexts.
- Identifies details, characters, main idea and sequence of ideas and events in textual/non textual material.
- Infers the meaning of unfamiliar words by reading them in context.
- Writes short descriptions.

Target life skills

Team work, appreciation and aesthetic sensibility.
The teacher can read the suggestive exemplar and make prior arrangements for the smooth conduct of Art Integrated sessions.

Material required

Used Paper, Old Newspapers, Old calendars, Sticks, Glue
(Children will be asked to bring the materials a day before the activity)

Day 1

Step 1: 'Sky Walk'

Students are asked to stand anywhere in the activity area. Teacher plays a slow instrumental music in the background. Students are asked to walk according to the rhythm. After a while the teacher can ask students to stop.

Following instructions can be given:

Choose any one from the group and look at each other. Now move freely in the play area looking at the person whom you have chosen. You must not change the focus. Concentrate on him /her. Move in accordance with the movement of your friend (Mirroring). Teacher allows the children to experience the movements for a brief period and later can ask the pair to pick one among them as a kite and other person as a string which regulates the kite. Students should choose their roles quickly. Give adequate time to experience.

Step 2:

Teacher asks the students to sit together and reflect on their experience as a kite and a string that regulates the kite. Students may later engage in kite-making using materials they brought.

Let's read the poem: Teacher may read out the poem while they engage in preparing. Once they complete making kites they can read the poem silently and try to infer its meaning.

This activity can be given as home assignment, depending on time available.

Day 2

Step 3: My little kite

Teacher takes the children to the open space outside the class room. Students are asked to fly their kites in the open area. They collectively fly their kites in the playground. (The kites may or may not fly; students can try different methods to fly it and teacher can encourage them to come up with different solutions)

OR

Teacher asks the students to stand in a big circle. Students are asked to hold their hands at the back. Teacher calls a volunteer from the group and makes him/her stand in the centre of the circle.

Following the **instructions** can be given:

The one standing in the centre is a kite. The kite has broken its string and is sad: it needs to find the string to fly again. All the ones standing in the circle are the wind and the wind takes the string away from the sight of the kite. The ones standing in the circle can pass the string from one person to other silently and tactfully without getting the attention of the kite standing in the centre. If the person standing in the centre finds the string, the one who holds the string will be the next kite.

Students in the circle can sing the song:

'Little kite, little kite,

Where's the string little kite

Little kite little kite

Can you find the string?'

The activity can be continued for 4 to 5 rounds.

Step 4: 'If I am the Kite'

Teacher asks the students to sit silently in a comfortable position. Teacher can discuss about the poem and discuss the main features of it with the students.

Teacher: "Imagine that you are the kites in the sky. What would you see from above when you look down? Draw the visual that comes to your mind and write a description". The visual presentations can be displayed on the picture wall.

गतिविधि 5.5

उच्च प्राथमिक खंड	विज्ञान
कक्षा	7
अवधारणा/थीम	जीवित का संसार
विषय	जीवन की शुरुआत
उप-विषय	मानव श्वसन प्रणाली
कला गतिविधि का प्रकार	दृश्य और प्रदर्शन कला (रचनात्मक गतिविधियों के साथ मैदान में पैटर्न बनाना, प्राणायाम , पोस्टर बनाना रंगोली आदि)

2 घंटे

संकल्पना: हम सांस कैसे लेते हैं ?

जब हम हवा में सांस लेते हैं, तो यह हमारी नासिका से होती हुई नाक गुहा से गुजरती है। नाक गुहा से, हवा हमारे फेफड़ों तक हमारे विंडपाइप के माध्यम से पहुंचती है। साँस लेने के दौरान, पसलियाँ भीतर और बाहर की तरफ फैलती और सिकुड़ती हैं और डायाफ्राम नीचे की ओर जाता है। यह गतिविधि हमारे सीने की गुहा में जगह बढ़ाती है और हवा फेफड़ों में धकेलती है। इस तरह से फेफड़े में हवा भर जाती हैं और जब हम सांस छोड़ते हैं तब डायाफ्राम ऊपर की तरफ जाता है और हवा बाहर निकल जाती है और हमारे फेफड़े सिकुड़ जाते हैं। यह छाती के आकार को सिकोड़ देता है और हवा बाहर फेंक दी जाती हैं

अधिगम प्रतिफल

- श्वसन पथ में सिलिया और श्लेष्मा की भूमिका को समझाता है।
- श्वसन पथ के माध्यम से हवा के चलने के मार्ग को समझना हैं।
- फेफड़ों और एल्वियोली की आकृति/संरचना के बारे में बताता है।
- सांस लेने और छोड़ने की प्रक्रिया को समझता है।
- एल्वियोली की संरचना और कार्य के बीच संबंध को बताता हैं।
- सांस पर व्यायाम के प्रभाव के बारे में बताता है।

- प्रदूषण और धुए से फेफड़े किस तरह प्रभावित होते हैं, यह भी बताता है।
- मानव श्वसन प्रणाली का एक आरेख बनाता है।
- हमारे दैनिक जीवन में ऑक्सीजन के महत्व को बताता है।
- विभिन्न जानवरों के श्वसन अंगों में अंतर को समझाता है।

लक्ष्य आधारित जीवन कौशल

आत्म-जागरूकता, समस्या-समाधान, रचनात्मक और तार्किक सोच, सहयोगी कार्य, संचार आदि का जीवन-कौशल

आवश्यक सामग्री

चार्ट पेपर, कैंची, गोंद, रंग, क्रेओन, रंगोली, सूती और ऊनी धागे आदि बच्चों को स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों को एकत्र करने और उनका उपयोग करने के लिए प्रेरित करने और संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है)

चरण 1

गहरी सांस लेना (सांस भीतर खीचने और सांस बाहर छोड़ने वाला प्राणायाम)

लक्ष्य: इस गतिविधि से बच्चे सांस लेने की लय का अनुभव कर सकेंगे।.

स्थान: इस गतिविधि को किसी खुली जगह अथवा मैदान में किया जा सकता है।

चरण 2

श्वसन प्रणाली के विभिन्न हिस्सों की कल्पना करने में छात्रों की सुविधा के लिए चर्चा शुरू की जा सकती है (उदाहरण के लिए कुछ सवाल नीचे दिये जा रहे हैं)

- हम सांस क्यों लेते है ?
  (हमारे शरीर में ऑक्सीजन की आवश्यकता को समझने के लिए प्रश्न पूछें)
- हम कभी-कभी खाते समय क्यों खाँसने लगते है इसका क्या कारण है? [श्वासनली (पवन-पाइप) और अन्न-पाइप (खाद्य-पाइप) की चर्चा करने के लिए प्रश्न पूछें)
- ऐसे सवाल पूछे जिससे चर्चा श्वासनली (ट्रेचिया) और भोजन-नली (ओएसोफगॅस) की तरफ जा सके?
- नाक से प्रवेश करने के बाद हवा अंदर कहाँ जाती है?

- सांस लेने की प्रक्रिया मे कौन-कौन से अंग शामिल होते हैं?
- आपके फेफड़ों का रंग कैसा है?

बच्चों (छोटे समूहों में) को मानव शरीर के श्वसन प्रणाली (रिस्पेरेटरी सिस्टम) का चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करें और फिर उन्हें उनके चित्र दिखाने के लिए कहें। उसके बाद इस बात पर एक छोटी सी बातचीत भी की जा सकती है कि सांस लेने के दौरान क्या-क्या पहले और क्या उसके बाद होता है। बच्चों ने इसे सीखने और करने के लिए जो प्रयास किया उसकी प्रशंसा करें।

बच्चे अब वास्तविक चित्र (डाइग्राम), जो उन्हें दिखाया गया है, को देख कर अपने बनाए चित्रों में सुधार कर सकते हैं। बच्चों से कहें की वह अपने बनाए चित्रों को कक्षा के डिस्पले बोर्ड पर लगाएँ। यह गतिविधि सभी के ताली बजवा कर समाप्त की जा सकती है।

चरण 3

मानव श्वसन प्रणाली और श्वसन मार्ग का अनुभव

बच्चों को कक्षा के बाहर या खुले मैदान या बरामदे में ले जाएँ और चॉक/कोयले या लकड़ी से ज़मीन पर 10 से 15 फीट की मानव श्वसन प्रणाली का चित्र बनाएँ। रंगोली और रंगों का प्रयोग श्वसन तंत्र के विभिन्न अंगों को उभार कर प्रदर्शित करने के लिए किया जा सकता है।

बच्चे श्वसन तंत्र के विभिन्न अंगों के लिए छोटे झंडे/तख्तियों/लेबल बनाने की प्रक्रिया में भी शामिल हो सकते हैं (जैसे नथुने, ग्रसनी, स्वरयंत्र, श्वसननली, ब्रांकाई, ब्रोन्किओल्स, एल्वियोली, फेफड़े और डायाफ्राम आदि) इन तख्तियों को एक छड़ी पर चिपकाया जाएगा और जमीन पर खींची गई श्वसन प्रणाली के संबंधित अंग को उससे प्रदर्शित किया जाएगा। साथ ही हर विद्यार्थी कार्ड बनाएगा जिस पर 'वायु' लिखा होगा।

शिक्षा विस्तार की गतिविधि

शिक्षक बच्चों द्वारा तैयार किए गए चित्र(डायग्राम) पर मानव श्वसन प्रणाली की प्रक्रिया को दर्शाने के लिए एक नृत्य नाटिका तैयार करने में विद्यार्थियों की मदद कर सकते हैं और इसे सुबह की प्रार्थना सभा में भी किया जा सकता है।

रोल-प्ले के लिए सुझाव- जब शिक्षक कहता है कि "साँस लें" तो 'वायु' लिखे हुए कार्ड लिए छात्र नथुने में प्रवेश करते हैं और धीरे-धीरे वायु मार्ग से चलते हैं। यह सुझाव दिया जा सकता है कि पवन पाइप के अंत तक पहुंचने के बाद, आधे छात्र ब्रांकाई पथ पर चलें और अन्य सभी ब्रोंकी पर। अगले चरण में छात्र संकीर्ण रूप से संकुचित वायु बैग (एल्वियोली) में प्रवेश करते हैं:

एल्वियोली का विस्तार होता है इसके अलावा प्रत्येक समूह छोटी शाखाओं मे ब्रोंकिओल्स और नीचे एल्वियोली में जाएँगे। इसी समय, मानव श्रृंखला में डायाफ्राम, एल्वियोली और फेफड़ों के आसपास के स्थान को बढ़ाने के लिए सिकुड़ेगी। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि बच्चों का सिमटना और फैलने की प्रक्रिया का संयोजन बहुत सधा हुआ हो (क्योंकि इस तरह सामूहिक शरीर की गति लयबद्ध नृत्य में परिणित होती है इस कार्य को आनंदमय बनाने के लिये शिक्षक संगीत का एक टुकड़ा बजा सकता है)।

"साँस छोड़ना" सुनने पर छात्रों का एक ही सेट अल्वियोली-ब्रोंचीओल्स-ब्रांकाई-ट्रेकिआ-लारेंक्स-ग्रसनी-नथुने और बाहर निकालने के मार्ग का अनुसरण करते हुए शरीर से बाहर निकलना शुरू कर देंगे।

अंत:विषय दृष्टिकोण

अँग्रेजी भाषा: श्रीमान फेफड़े के साथ साक्षात्कार (श्वसन परिवार)

रोल-प्ले: प्रदूषित हवा और साफ हवा में सांस लेने वाले फेफड़ों के बीच की बातचीत

गणित: परिवार और आसपास धूए के संपर्क मे रहने वाले और धुएँ के कम संपर्क में रहने वाले व्यक्तियों का सर्वेक्षण जिसमें धुएँ से उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव को देखा जा सकता है और उसका पाई चार्ट बनाया जा सकता है। छात्रों को धूम्रपान के बुरे प्रभाव तथा परिणामों के बारे में जागरूक करना चाहिये।

विस्तारित शिक्षा

शिक्षक बच्चों को यह पता लगाने और विचार करने के लिए कह सकते हैं कि जो वायु, वायु-कोशिका में जाती तो उसका क्या होता है। क्या यह शरीर के अन्य भागों में जाती है? शरीर के अन्य भागों में हवा कैसे जा सकती है?

बच्चों को श्वसन प्रणाली का एनीमेशन दिखाया जा सकता है, जिसमें एल्वियोली, फेफड़े, पवन पाइप, और डायाफ्राम की संरचना और कार्य पर चर्चा की जा सकती है।

गतिविधि 5.6

उच्च प्राथमिक खंड	गणित
कक्षा	8
पाठ	ठोस आकृतियों को देखना
कला गतिविधि	दृश्य और प्रदर्शन कला

आवश्यक सामग्री:

दो कागज की कठपुतलियाँ, समाचार पत्र/रद्दी कागज, पेंसिल, स्केल , कैंची, गोंद/गोंद या स्थानीय रूप में गोंद की तरह इस्तेमाल होने वाली कोई वस्तु, झाड़ू की तीलियाँ, मिट्टी/आटा/चावल का आटा या ऐसा कुछ जो स्थानीय रूप से प्रयोग में लाया जाता है।

अधिगम प्रतिफल

- विभिन्न 3D आकृतियों की पहचान करना
- 2D एवं 3D आकृतियों के बीच अंतर करना
- 3D आकृति को समतल सतह जैसे कागज़ एवं श्यामपट्ट पे बनाना
- बहुमुखी आकृतियों का निर्माण करना
- गणितीय शब्दों का अर्थ समझना- चेहरे, कोने एवं किनारों
- 3D आकृतियों के अवयव की पहचान करना
- 3D आकृतियों के द्वारा महल का निर्माण करना
- विभिन्न 3D आकृतियों की कल्पना करना और उनके शीर्ष, पक्ष और सामने के दृश्य बनाना
- प्रिज़्म एवं पिरामिड के बीच का अंतर करना

पहला दिन

चरण 1: कहानी सुनाना

शिक्षक बच्चों को एक कहानी सुना सकता है। कहानी की संकल्पना को समझने के लिए छात्रों को कुछ गणितीय सिद्धांतों को समझने की जरूरत होगी।

कहानी: एक छोटी बच्ची समुद्र तट पर रेत पर खेल रही थी। वह रेत पर घर बना रही थी। अचानक एक बड़ी राक्षसी लहर दुष्ट हँसी के साथ आई "हाहाहा। उसकी ऊंचाई छोटी लड़की के सिर तक थी। लहर बोली- लड़की! तुम्हें समुद्र के भीतर मेरे लिए घर बनाने चलना होगा समुद्र में नीचे बहुत नीचे। "लड़की डर गई और उसने कहा-"अरे नहीं! मैं तुम्हारे साथ समुद्र में नहीं आ सकती हूँ"। राक्षसी लहर ने थोड़ा सोचा और कहा "हम्म, तब तो तुम अपने घर तभी जा सकोगी जब तुम मेरे लिए रेत पर कोई तीन सुंदर आकृतियाँ बनाओ।

शिक्षक बच्चों से पूछते हैं कि क्या वे खेलने के लिए घर/टेंट/किले या किसी अन्य स्थान पर रहना याद कर सकते हैं (शिक्षक बच्चों के जवाब को ध्यान से सुनें और उन्हें प्रोत्साहित करें) इसके अलावा, शिक्षक पूछ सकता है कि वे किन वस्तुओं का उपयोग करते हैं और इन्हें कौन सी गणितीय आकृतियों से जोड़ सकते हैं।

सामूहिक गतिविधि (2-3 बच्चों का समूह): अध्यापक बच्चों से समूह में करने को कहें और उसे लिखने के लिए भी कहें।

- 3- डी आकृतियाँ क्या होती हैं?
- यह 2-डी आकृतियों से किस तरह भिन्न हैं?
- क्या आप 3-डी आकृतियों के कुछ उदाहरण बता सकते हैं?
- अपने आस-पास आप उन्हें कहाँ खोज सकते हैं? (बच्चे अपने आस-पास ऐसी आकृतियों को खोजेंगे जिसे अध्यापक सही है कि गलत यह बता कर सुनिश्चित करेगा)
- क्या आप 3-डी आकार के घटकों को नाम दे सकते हैं?
- 3-डी आकृतियों के मुक्त हस्त चित्र बनाने की कोशिश करें, उनके पास मौजूद चेहरे, कोने और किनारों की संख्या की पहचान करें और इसे रिकॉर्ड करें।

(3-डी आकृतियों की अवधारणा का दोहराव)

चरण 2 एक संरचना का रेखाचित्र

(उद्देश्य: 2-डी रेखाचित्र पर 3-डी चित्र बनाना)

अध्यापक: उद्देश्य सुनिश्चित करके छात्रों को 3-डी का उपयोग करते हुए संरचना बनाने के लिए कहेगा (स्मारक/पूजा स्थल/किला/निवास स्थान आदि)। संरचना को आरेखित करने के लिए छात्र किसी भी समय किसी भी आकार का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं।

अध्यापक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि चित्र का प्रत्येक भाग 3-डी आकार का होना चाहिए।

दूसरा दिन

चरण 3: 3-डी आकृतियों का उपयोग करते हुए संरचना बनाना (सामूहिक गतिविधि)

छात्रों को 3-डी आकृतियों का उपयोग करते हुए एक संरचना बनाने के लिए कहें। वह कक्षा की छात्र संख्या के अनुसार 4-5 बच्चों के समूह बना दें। निर्माण के लिए 20 मिनट का समय दें। मॉडल संरचना को प्रदर्शित किया जाएगा।

अन्त: विषय दृष्टिकोण: अँग्रेजी का पाठ– सुनामी

शिक्षक दानव तरंग को सुनामी/अन्य प्राकृतिक आपदाओं से जोड़ सकता है और कहानी को मौजूदा जल/प्रदूषण-संबंधी, जल संबंधी पर्यावरणीय समस्याओं से जोड़ सकता है। वह निम्नलिखित सवाल भी पूछ सकती है:-

- क्या तुम्हें लगता है कि सच में समुद्र में दानव होते हैं?
- क्या तुम्हें लगता है कि वह गुस्सा हो जाते हैं?
- आप हमारे समुद्रों को मौजूदा राक्षसों से बचाने के लिए कोई उपाय सुझा सकते हैं।
- छात्र की भूमिका में आप क्या-क्या कर सकते हैं?

सामाजिक विज्ञान

शिक्षक इस बात पर चर्चा शुरू करेगा कि कुछ वस्तु निर्माण संरचनाएं प्राकृतिक आपदाओं से क्यों बची हुई हैं, जबकि अन्य नहीं। चर्चा महत्वपूर्ण चिंतन की ओर ले जाती है जो पारंपरिक वास्तुकला तकनीकों और स्थानीय संसाधनों की प्रासंगिकता को सामने लाती है।

मूल्यांकन के लिए सुझाव:

- स्व-मूल्यांकन
- सहपाठियों द्वारा मूल्यांकन अवलोकन रिकॉर्ड (विशेष स्थितियों कथन और कहानियों के साथ आदि जहां भी संभव हो)।

5.7 कला समेकित अधिगम में प्रयोग की जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण तरीके और तकनीक

- **बुद्धिशीलता:** यह एक समूह में रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए एक व्यावहारिक अभ्यास है, और एक बहुत ही उपयोगी प्रशिक्षण तकनीक भी है। इस बुद्धिशीलता का उद्देश्य एक निश्चित समय के भीतर एक विशिष्ट विषय पर निःसंकोच विचारों को एकत्र करना है। एक बार जब आप समूह को विषय बता देते हैं, तो उन्हें इससे जुड़े विचारों, टिप्पणियों, वाक्यांशों या शब्दों को प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित करें। सभी प्रतिक्रियाओं को टिप्पणियों या प्रश्नों के बिना, ब्लैक-बोर्ड या फ्लिप-चार्ट पर लिखें। विचार-मंथन की प्रक्रिया किसी भी निर्णयात्मक टिप्पणी के प्रलोभन से बचने के लिए अनुशासन की मांग करती है।
- **आइस ब्रेकर:** यह एक ऐसी गतिविधि है जो आनंदपूर्ण सीखने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए आयोजित की जाती है। ये गतिविधियाँ कला आधारित

आइस ब्रेकर का आनन्द लेते हुए
निगम प्रतिभा विद्यालय, नाँगलोई सैदान, नई दिल्ली

अनुभवों को आसानी से शुरू करने के लिए उपयोगी हैं क्योंकि वे कक्षा में एक सहज और सवांद के लिए उपयुक्त वातावरण बनाने में मदद करते हैं। आइस-ब्रेकर प्रकृति में लचीले होने चाहिए और इन्हें जरूरत के अनुसार डिजाइन और इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

सजृन की मुस्कुराहटें- दांतों के मॉडल प्रदर्शित करते हुए बच्चे
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कनवरसिका, नूह, हरियाणा

- **सामूहिक गतिविधि:** यह एक बहुत ही सामान्य तरीका है जिसमें कोई भी गतिविधि को अन्य तरीकों के साथ जोड़ा जा सकता है। छोटे समूहों में चर्चा समूह के अन्य सदस्यों के अनुभवों के माध्यम से सीखने में उपयोगी होती है; यह समूह में आपसी संकोच को कम करने में मदद करता है, जीवन-कौशल को बढ़ाता है और प्रत्येक शिक्षार्थी के सामाजिक-भावनात्मक विकास में मदद करता है। समूह बनाने के कई तरीके हैं पर यह सबसे अच्छा है अगर शिक्षक छात्रों को समूहों में विभाजित करने की विधि को बदलता रहे ताकि रुचि को बनाए रखा जा सके।
- **प्रस्तुति:** यह एक ऐसी तकनीक है जिसे शिक्षक और विद्यार्थी दोनों द्वारा प्रभावी रूप से उपयोग किया जा सकता है। शिक्षक विद्यार्थियों को सूचना, ज्ञान या विचारों को साझा करने के लिए इस पद्धति का उपयोग कर सकते हैं। यह तकनीक ऐसी स्थिति में काफी प्रभावी है जहाँ अपेक्षाकृत कम समय में बहुत सारी जानकारियाँ दी जाने की स्थिति होती है।

- **रोल-प्ले/अनुरूपता आधारित नाटक:** खेल प्रतिभागियों को रोल प्ले या अनुरूपता-आधारित भूमिका सौंपकर और उन्हें कार्य करने के लिए एक स्थिति प्रदान करके वास्तविकता का अनुकरण किया जा सकता है। रोल प्ले में प्रत्येक व्यक्ति को जो रोल सौंपा गया है, उसकी भूमिका स्पष्ट होनी चाहिए और रोल प्ले के उद्देश्यों को अच्छी तरह से परिभाषित किया जाना चाहिए। एक भूमिका निभाने का उद्देश्य जीवन में व्यवहार, स्थितियों और अनुभवों को नाटकीय और सुखद तरीके से लाना है। कला समेकित अधिगम में इसे नाट्य प्रक्रिया के रूप में इस्तेमाल कर सकते है।

संदर्भ

1. खान, मोहम्मद मुजफ्फर: अली, शेख लियाकत, द इंपोर्टेन्स ऑफ फाइन आर्टस एडुकेशन एन ओवरविव्यू जरनल्स, जरनल ऑफ रिसर्च इन ह्यूमनिटीज एण्ड सोशल साइंस वॉल्यूम-4 इश्यू 10, 2016
2. द सिओल एजेंडा: गोल्स फॉर द डेव्लपमेंट ऑफ आर्ट्स एडुकेशन, द सेकेण्ड वर्ल्ड कोंफेरेंस ऑन आर्ट एडुकेशन सिओल 2010
3. पोजीशन पेपर ऑन आर्ट्स, म्यूजिक,डांस एंड थिएटर, एनसीईआरटी 2006
4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एनसीईआरटी, 2005
5. ट्रेनिग पैकेज फॉर आर्ट इंटीग्रेटेड फॉर प्राइमरी टीचर एनसीईआरटी 2015
6. सेंट जॉर्ज, डोना. सेंट मोर स्कूल्स आर वर्किंग टु इंटीग्रेट्स आर्टस इन क्लास रूम' वाशिंगटन पोस्ट. दिसंबर 2015
7. नोबोरी मारिकों. 'हाऊ द आर्ट्स अनलॉक द डोर टु लर्निंग; एडुटोपिया जॉर्ज लूकस फाउंडेशन फॉर एडुकेशन अगस्त 2012
8. रिपोर्ट ऑन नेशनल सेमिनार ऑन आर्ट इंट्रीगेटेड लर्निंग, डीईएए, एनसीईआरटी 2012
9. प्रसाद, देवी. आर्ट द बेसिस ऑफ एडुकेशन, नेशनल बुक ट्रस्ट , 1998
10. जे.एम. स्मिता, एक्टिव लर्निंग एज़ एन इफ़ेक्टिव टूल टु एनहेन्स कोग्नीशन, जरनल ऑफ इण्डिया एडुकेशन नवंबर 2017. पृष्ठ. 155-166
11. रेइस, रिकर्डो. 'पब्लिक आर्ट एज़ एन एडुकाशन रिसोर्स: इन्टरनेशनल जनरल ऑफ एडुकेशन थ्रो आर्ट, वॉल्यूम. 6, 2010. पृष्ठ. 85-96
12. डनकम, पी. 'अ केस फॉर एन एडूकेशन ऑफ एवेरी डे एस्थेटिक एक्सपेरिएन्स' स्टूडेंट इन आर्ट एडुकेशन वॉल्यूम. 40, 1999. पृष्ठ. 295-311
13. स्पीलाने, जेम्स पी. मेगन होपकिंस, एंड टेरेसी एम. स्वीट. "इंट्रा- एंड इंटरस्कूल इंतरेक्सन अबाउट इंस्ट्रकशन: एक्सप्लोरिंग द कंडीशन फॉर सोशियल केपिटल डेव्लपमेंटE" अमेरिकन जनरल ऑफ एडुकेशन, नंबर. 1, 2015. पृष्ठ. 71-110.
14. ब्रौईल्लेत्ते, लिएन. हाऊ द आर्ट्स हेल्प चिल्डेरेन टु क्रिएट हेल्थी सोशियल स्क्रिप्ट्स: एक्सप्लोरिंग द परशेपशन ऑफ एलीमेंटरी टीचर्स, आर्ट एडुकेशन पॉलिसी रिव्यू, 111:1, 2009. पृष्ठ 16-24

15. माइडे, रोज़ी, शॉ मे. 'कम्यूनिटी डेव्लपमेंट एंड द आर्टस:सस्टेनिंग द डेमोक्रेटिक इमेजिनेशन इन लीन एंड मीन टाइमस', जनरल ऑफ आर्ट एंड कम्युनिटीज़, वॉल्यूम/ अंक. 2:1, 2011, पृष्ठ.. 65-80.

16. पर्केस मिशेल ई . द आर्ट ऑफ पेड़ोगोजी: आर्टिस्टिक बिहेवियर एज़ ए मॉडेल फॉर टीचिंग, आर्ट एडुकेशन सितंबर 1992. पृष्ठ. 51-57

17. ग्युओट्टी, के. डब्लू. एन. डब्लू.सोचक्का, टी. कोस्टानिओ, जे. वलथर, एंड एन. एन. केलम. एसटीईएएं एस सोशल प्रेक्टिस: कल्टीवेटिंग क्रिएटिविटी इन ट्रांसडिसिलिपनरी स्पेस आर्ट एडुकेशन 67.6: 2014

18. हार्वे, स्टीव. क्रिएटिव आर्ट थेरेपिस्ट इन द क्लासरूम :द स्टडी ऑफ कोग्नेटिव , इमोशनल , मोतिवेशनल चेंज , अमेरीकन जनरल ऑफ डांस थेरपी , 1989

SUGGESTED READINGS/ सुझाई गई पठन-सामाग्री

बढ़ेका गिजुभाई, दिवास्वपन, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2004

क्लार्क, आर. आर्ट एडुकेशन: इशू इन पोस्टमोडरिस्ट पेड़गोजी, केनेडियन सोसाइटी फॉर एडुकेशन थ्रो आर्ट एंड द नेशनल आर्ट एडुकेशन एसोशिएशन, 1996

फ्रोबले, फ्रीएडरीक. अनुवाद- हैलमन डब्लयू. एन. द एडुकेशन ऑफ मैन, डोवर पब्लिकेशन, 2005

फ्राय, रोजर. विज़न ऐंड डिजाइन, वेन्त्वर्थ प्रेस 2016

मार्शल, जे. सबसेनटिव आर्ट इंटीग्रेशन= एकसेमपालरी आर्ट एडुकेशन 59.6: 2006

पियागेट, जीन लेंगवेज़ एंड ठोट ऑफ द चाइल्ड, रूटलेज और केगन पॉल, लंदन, 1926

पोजीशन पेपर ऑन आर्ट्स, म्यूजिक, डांस ऐंड थिएटर,एनसीईआरटी, 2006

प्रसाद, देवी, आर्ट द बेसिस ऑफ एडुकेशन, नेशनल बुक ट्रस्ट, 1998

रीड, हरबर. एडुकेशन थ्रु आर्ट, फेबर एंड फेबर, लंदन, 1945.

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एनसीईआरटी, 2005

ट्रेनिग पैकेज फॉर आर्ट इंटीग्रेशन फॉर प्राइमरी टीचर वॉल्यूम 1 और 2 एनसीईआरटी, 2015

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING